साहित्य संगम

(वार्षिक लघु पत्रिका)

प्रकाशक : हिंदी साहित्य परिषद्, हिंदी विभाग, कालिंदी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

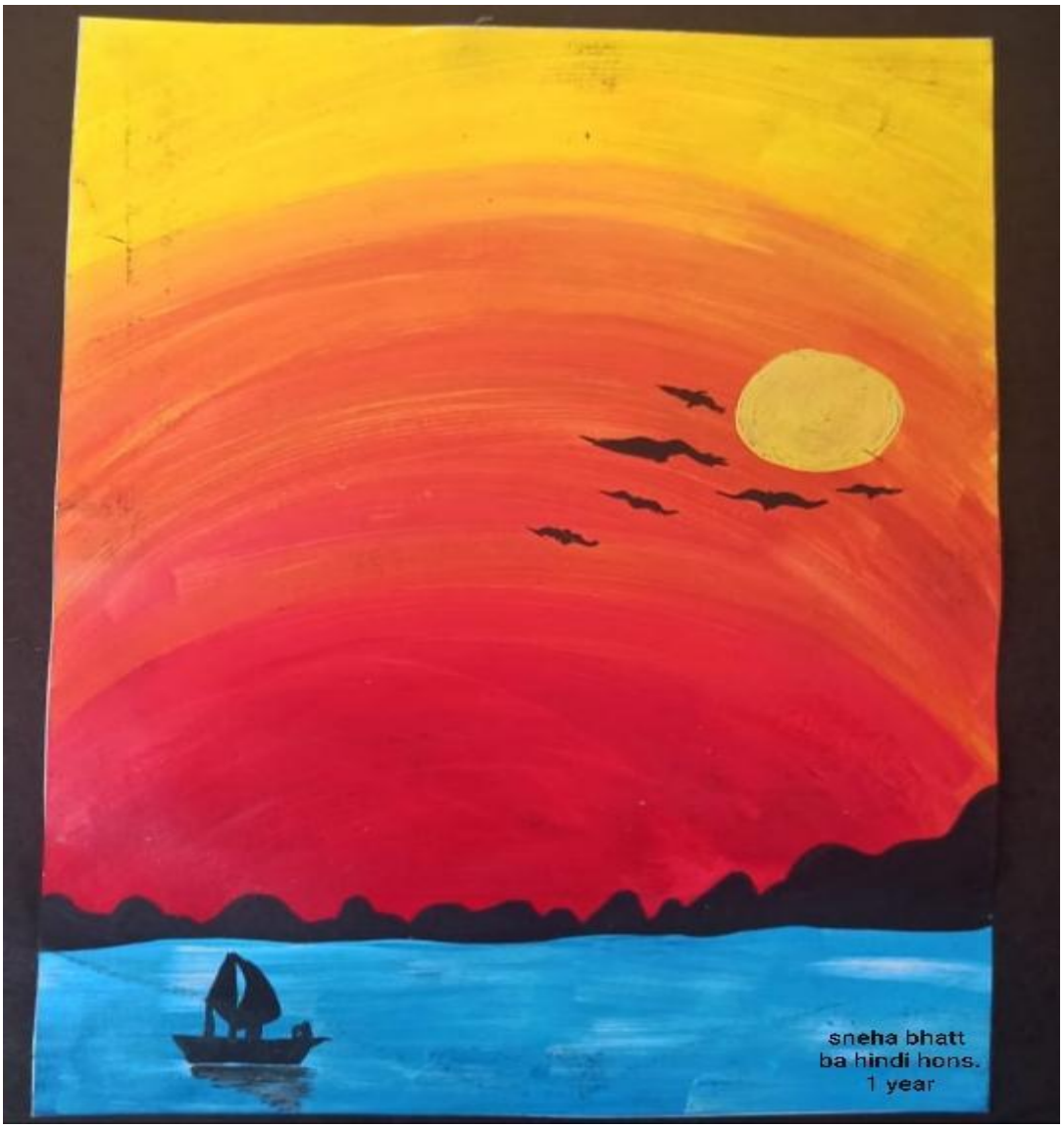

2019-20

प्राचार्या की कलम से ...

मानव जीवन में साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि साहित्य ही मनुष्य की बुराइयों का अंत करके उसे एक बेहतर इंसान बनाता है। देखा जाए तो साहित्य के बिना मनुष्य का जीवन अधूरा है। साहित्य ही मनुष्य के जीवन में खुशियाँ भरता है। साहित्य के माध्यम से ही मनुष्य अच्छा बोलना और सुनना सीखता है।

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य का गौरव का अनुभव नहीं है, वह देश उन्नति नहीं कर सकता। यह सच है कि किसी देश की भाषा और साहित्य के आधार पर ही वहाँ के समाज, सभ्यता एवं संस्कृति का सहज ही आंकलन किया जा सकता है, क्योंकि साहित्य में मानवीय समाज के सुख-दुःख, आशा-निराशा, साहस-भय और उत्थान-पतन की अभिव्यक्ति होती है। साहित्य राष्ट्रीय एकता, मानवीय समानता, विश्व-बंधुत्व और सद्भाव के साथ हाशिए के आदमी के जीवन को ऊपर उठाने का काम करता है।

साहित्य में सत्य की साधना है, शिवत्व की कामना है और सौंदर्य की अभिव्यंजना है। शुद्ध, जीवंत एवं उत्कृष्ट साहित्य मानव समाज की संवेदना और उसकी सहज वृत्तियों को युगों-युगों तक जनमानस में संचारित करता रहता है। तभी तो कबीर हो या प्रेमचंद उनकी रचनाएँ आज भी समाज के लोगों में चेतना जगाने का काम कर रही हैं।

मुझे इस बात की अत्यंत ख़ुशी है कि हर वर्ष की भांति कालिंदी महाविद्यालय का हिंदी विभाग 'साहित्य संगम' लघु पत्रिका का प्रकाशन इस वर्ष भी कर रहा है। यह पत्रिका छात्राओं को एक साहित्यिक मंच प्रदान करती है, जिसके माध्यम से छात्राएं अपनी लेखन क्षमता को प्रकट करती हैं, जो छात्राओं में एक उम्मीद, आत्मविश्वास और चेतना को जाग्रत करने का काम करती है।

समाज और साहित्य के प्रति अपना दायित्व समझते हुए कालिंदी महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा साहित्यिक पत्रिका के रूप में उठाया गया यह कदम निश्चित रूप से सराहनीय है। हिंदी विभाग और सभी छात्राएं बधाई की पात्र हैं।

ABansal

प्राचार्या

डॉ. अंजुला बंसल

कालिंदी महाविद्यालय

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।

बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

साहित्य समाज का दर्पण है। एक साहित्यकार समाज के विभिन्न सरोकारों को अपनी लेखनी का हिस्सा बनाता है। वह अपनी सर्जनात्मक क्षमता से शोषित, पीड़ित, हाशिए के लोगों की आवाज बनता है। लेखक अपनी रचनाओं के द्वारा समाज के लोगों को नई दिशा देता है, उनको प्रेरित करता है. इसी उम्मीद के साथ हिंदी साहित्य परिषद्, हिंदी विभाग द्वारा प्रकाशित 'साहित्य संगम' लघु पत्रिका छात्राओं को अपनी सर्जनात्मकता को अभिव्यक्त करने का एक मंच प्रदान करती है। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि हमारी छात्राओं ने अपनी लेखन कला के माध्यम से समाज के विभिन्न पहलुओं पर अपनी समझ का बखूबी परिचय दिया है। वे अपनी रचनाओं में स्त्री और दलित अस्मिता की बात करती हैं, परिवार और समाज की बात करती हैं, भ्रष्टाचार, राजनीति और बाजार को लेकर एक समझ रखती हैं। जिससे पता चलता है कि छात्राएं अपने समय और समाज को लेकर कितनी सतर्क, संवेदनशील और जागरुक हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि यह नई पीढ़ी अपनी लेखन कला से, अपनी सर्जनात्मकता से, अपनी सोच और समझ से साहित्य और समाज में अपना महत्वपूर्ण योगदान देगी।

डॉ. मंजु शर्मा

संयोजिका

हिंदी साहित्य परिषद्

संपादक मंडल

डॉ. मंजु शर्मा

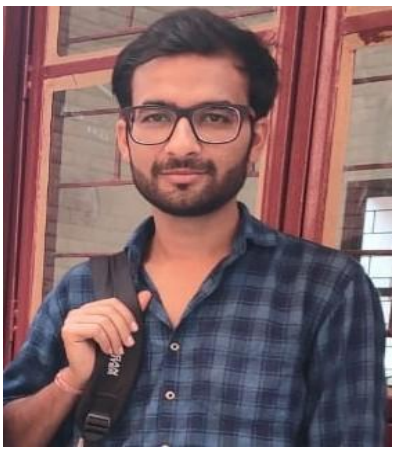

डॉ. सुरेश चंद मीणा

डॉ. लवकुश

प्राची शर्मा

कविता सैनी

स्नेहा भट्ट

हिंदी विभाग

कालिंदी महाविद्यालय

(दिल्ली विश्वविद्यालय)

कालिंदी महाविद्यालय की स्थापना सन 1967 में दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित महिला शैक्षिक संस्थानों के रूप में हुई. देवनगर के एक विद्यालय भवन से शुरू हुआ यह महाविद्यालय आज पूर्वी पटेल नगर में 8.25 एकड़ में फैले खुबसूरत परिसर में अवस्थित है, महाविद्यालय में 21 मुख्य शैक्षणिक पाठ्यक्रमों के अलावा विदेशी भाषाओं में 5 समकालीन, अल्पकालीन, एड-ऑन सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम भी उपलब्ध हैं। फ्रेंच और चीनी, यात्रा और पर्यटन, संचार कौशल और व्यक्तित्व विकास के साथ कौशल विकास सम्मिलित हैं, जिसमें छात्राएं अपने कौशल के विकास हेतु दाखिला लेती हैं। महाविद्यालय का उद्देश्य नियमित छात्राओं सहित गैर कॉलेजिएट महिला शिक्षा बोर्ड और स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग के तहत दाखिला लेने वाली 7,400 से अधिक छात्राओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना तथा उनका चौमुखी विकास करना है। इस संस्थागत जिम्मेदारी का निर्वाह में 199 योग्य, प्रतिष्ठित शिक्षक संकाय के समूह के साथ 86 कुशल और सहकारी प्रशासनिक/ तकनीकी/ सहायक कर्मचारी अपना योगदान दे रहे हैं। प्रशासन ने महाविद्यालय को सभी छात्राओं के लिए सुरक्षित एवं सुविधा संपन्न बनाने का पूर्ण प्रयास किया है

कालिंदी कॉलेज आज निरंतर प्रगति की सीढियाँ चढ़ रहा है. जिसने हाल ही में भारत के कॉलेजों के बीच राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क इंडिया रैंकिंग (NIRF) 2020 के द्वारा 123 वां स्थान प्राप्त किया है। ये उपलब्धियां उन सभी हितधारकों के अथक प्रयासों का परिणाम है, जिन्होंने छात्राओं में जागरूकता लाने, उनके सर्वांगीण विकास तथा उन्हें एक जिम्मेदार नागरिक बनाने में अपना योगदान दिया। महाविद्यालय वर्ष भर चलने वाली शैक्षणिक, सहशैक्षणिक व अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से छात्राओं में समूह-भावना, आलोचनात्मक समझ, अभिनव विचारों व रचनात्मक प्रयासों के लिए मंच प्रदान करता है और सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े समुदाय से आने वाले विद्यार्थियों की बेहतर शिक्षा के लिए प्रतिबद्ध है. अपने समर्पित कर्मचारियों और उत्कृष्ट बुनियादी ढांचे को देखते हुए यह कोई आश्चर्य नहीं है कि कॉलेज अपनी छात्राओं और समाज की अच्छी सेवा कर रहा है। यह अपनी छात्राओं की लगातार बदलती जरूरतों के प्रति संवेदनशील है और उन्हें बेहतर सुविधाएं और संसाधन उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है।

हिंदी विभाग

(कालिंदी महाविद्यालय)

हिंदी विभाग की स्थापना सन 1967 में कालिंदी महाविद्यालय की स्थापना के साथ ही की गई थी. विभाग की शुरुआत बी.ए. प्रोगाम हिंदी पाठ्यक्रम के शिक्षण के साथ की गई. बाद में बी.ए. हिंदी ऑनर्स पाठ्यक्रम की शुरुआत सन 1971 में और एम्.ए. हिंदी पाठ्यक्रम की शुरुआत सन 1991 में की गई. इसके अलावा हिंदी विभाग के द्वारा वाणिज्य व कला स्नातक पाठ्यक्रमों की छात्राओं को विविध अंतरानुशासनिक पाठ्यक्रम भी पढाया जाता है. इस समय विभाग में 13 शिक्षक अपनी सेवाएं दे रहे हैं. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए समर्पित विभाग की समिति 'हिंदी साहित्य परिषद्' समय समय पर विभिन्न शैक्षणिक व सहशैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन करती रहती है. हिंदी विभाग में अब तक महत्वपूर्ण योगदान देने वाले प्रतिभाशाली और सुदृढ़ व्यक्तित्व के धनी शिक्षकों की सूची इस प्रकार है –

क्र.	शिक्षक	कार्यग्रहण तिथि	सेवानिवृत तिथि
1.	श्रीमती आदर्श कुमारी जैन	21.07.1967	30.09.1980
2.	श्रीमती कमला मधोक	21.07.1967	31.03.1987
3.	डॉ. कुसुम गुप्ता विषय- हिंदी और गुजराती व्याकरण के अंगों का तुलनात्मक अध्ययन	21.07.1967	नवम्बर,2010
4.	डॉ. प्रेम गौड़	16.07.1967	31.12.2003
5.	सुश्री सुकांति केशव एम्.लिट् विषय- प्रसाद के नाटकों में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली	16.07.1967	31.06.2006
6.	डॉ. प्रामिला गोयल विषय- प्रेमचंद और हरिनारायण आप्टे के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन	21.07.1968	05.05.2005

7.	श्रीमती नीना भाटिया	25.07.1968	30.04.2006
8.	डॉ. राज बुद्धिराजा विषय- देव और उनकी कविता	16.07.1969	15.03.2002
9.	डॉ. पुष्पलता वर्मा विषय- गाथा सप्तशती और रीतिकालीन श्रंगारिक सतसैयों का तुलनात्मक अध्ययन	16.07.1969	02.07.2003
10.	डॉ. मीना गुप्ता विषय- प्रेमचंद के कथा साहित्य की समीक्षाओं का मूल्यांकन	16.07.1969	MAY2010
11.	डॉ. प्रभा शर्मा विषय- प्रेमचंद और उनके समवर्ती कथा साहित्य में लोक संस्कृति	20.07.1969	10.05.2005
12.	श्रीमती प्रभा शोभा छिब्बर एम्.लिट्. हिंदी समीक्षा	11.09.1969	31.01.2005
13.	डॉ. शशि प्रभा गुप्ता विषय-प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यासों में नैतिक मूल्य	11.09.1969	01.09.2005
14.	श्रीमती अंशुमाला कुमार AUG2012 एम्. लिट्. विषय- सातवें दशक के हिंदी नाटकों में संवाद योजना		28.07.1973
15.	डॉ. मालती (प्राचार्या कालिंदी महाविद्यालय) 12.12.2007 विषय- आधुनिक बृज काव्य में अभिव्यंजना शिल्प		09.06.1967
16.	श्रीमती पुष्पा हंस		
17.	डॉ. अनीता गुप्ता हिंदी वर्तनी का विकास	07.09.1987	
18.	डॉ. मंजु शर्मा विषय- स्वातंत्र्योत्तर सांप्रदायिक सौमनस्य और हिंदी नाटक	14.07.2006	कार्यरत
19.	डॉ. आरती सिंह घनानंद और प्रसाद के स्वछंदतावादी काव्य का तुलनात्मक अध्ययन	14.07.2006	कार्यरत
20.	डॉ. मोहिनी श्रीवास्तव समकालीन स्त्री विमर्श के संदर्भ में साठोत्तर हिंदी उपन्यास	14.07.2006	कार्यरत
21.	सुश्री रेखा मीणा मीडिया	23.08.2010	कार्यरत
22.	विभा ठाकुर हिंदी और बांग्ला के महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन	06.09.2010	कार्यरत
23.	सुश्री बलजीत कौर 'अग्निलोक' में रामकथा का रचनात्मक प्रयोग	28.07.2011	कार्यरत
24.	डॉ. पुखराज जांगिड साहित्य का सिनेमाई रूपांतरण	04.08.2011	कार्यरत
25.	डॉ. रक्षा गीता धर्मवीर भारती के साहित्य में परिवेश बोध	28.07.2011	कार्यरत
26.	डॉ. ऋतु समकालीन हिंदी नाटकों में वर्चस्व और प्रतिरोध	31.07.2012	कार्यरत

27. डॉ. ब्रह्मानंद 08.10.2015 कार्यरत
    हिंदी दलित आलोचना का स्वरुप और दृष्टियाँ
28. श्री हेमंत रवि रमन 13.01.2016 कार्यरत
    भुवनेश्वर के नाटकों की रंग संकल्पना
29. डॉ. नीरू 15.03.2016 कार्यरत
    सामानांतर सिनेमा श्याम बेनेगल की फ़िल्में और
    हाशिए का विमर्श
30. डॉ. लवकुश 08.08.2019 कार्यरत
    विषय- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकों में गाँधी-नेहरू दर्शन
31. डॉ. ममता चौरसिया 08.08.2019 कार्यरत
    विषय- महाकवि निराला के साहित्य में शोषित दलित वर्ग
32. डॉ. सुरेश चंद मीणा 09.08.2019 कार्यरत
    विषय- मध्यकालीन प्रेमाख्यानक काव्य में स्त्री-अस्मिता के
    विविध आयाम

शिक्षकों की उपलब्धियाँ

डॉ. मंजु शर्मा

पुस्तकें –

1. सांप्रदायिक सद्भाव और हिंदी नाटक – रचनाकार पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
   ISBN – 978-93-87932-25-8
2. राम की लड़ाई : संवेदना और शिल्प - रचनाकार पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
   ISBN – 978-93-87932-30-2

डॉ. आरती सिंह

पुरस्कार –

1. सर्वश्रेष्ठ व्याख्याता पुरस्कार – उच्च शिक्षा निदेशालय, दिल्ली सरकार

अतिथि प्राध्यापक –

1. एसोसिएट प्रोफ़ेसर – हंकुक विश्विद्यालय ऑफ़ फॉरेन स्टडीज, साउथ कोरिया

हिंदी साहित्य परिषद् द्वारा आयोजित गतिविधियाँ

सत्र – 2019-20

संयोजिका - डॉ. मंजु शर्मा
सहसंयोजिका – डॉ. विभा ठाकुर, सुश्री बलजीत कौर
परामर्श मंडल – समस्त हिंदी विभाग

हिंदी साहित्य परिषद, हिंदी विभाग की एक ऐसी साहित्यिक संस्था है जो छात्राओं की प्रतिभा को प्रकट करने के लिए एक मंच प्रदान करती है. परिषद् की ओर से समय-समय पर विभिन्न प्रकार की साहित्यिक गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं, जिन से छात्राओं में सृजनात्मक क्षमता का विकास हो सके. वार्षिक सत्र 2019-20 में हिंदी साहित्य परिषद ने राष्ट्रीय संगोष्ठी, विभिन्न प्रतियोगिताएँ, एकल व्याख्यान, अंतरराष्ट्रीय व्याख्यान माला आदि का आयोजन किया. जिनका विवरण इस प्रकार है.

- हिंदी साहित्य परिषद् चुनाव :– 12 अगस्त 2019 को सत्र 2019-20 हेतु हिंदी साहित्य परिषद् के पदाधिकारियों का चुनाव कक्ष संख्या TRI-1 में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ. चुनाव के दौरान हिंदी विभाग के सभी शिक्षक एवं स्नातक स्तर के विद्यार्थी उपस्थित रहे. पदाधिकारियों के नाम इस प्रकार हैं-
  अध्यक्ष - प्राची शर्मा (तृतीय वर्ष)
  उपाध्यक्ष – प्रिया मिश्रा (तृतीय वर्ष)
  सचिव – पल्लवी (द्वितीय वर्ष)
  कोषाध्यक्ष – ख़ुशी (प्रथम वर्ष)
  12 अगस्त 2019 को ही स्नातक हिंदी विशेष प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष से दो दो कक्षा प्रतिनिधियों का चुनाव किया गया. जिनके नाम इस प्रकार हैं-
  प्रथम वर्ष - प्रियांशी और प्रिया
  द्वितीय वर्ष - तान्या गोयल और सविता
  तृतीय वर्ष - कविता सैनी और अंजलि रानी

शिक्षकों के साथ हिंदी साहित्य परिषद् के पदाधिकारी

- एक-दिवसीय संगोष्ठी :– 12 सितम्बर, 2019 को हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी साहित्य परिषद, कालिंदी कॉलेज की ओर से एक-दिवसीय संगोष्ठी 'वैश्विक संदर्भ में हिंदी' विषय पर आयोजित की गई. जिसमें मुख्य वक्ता श्री बलराम (वरिष्ठ पत्रकार एवं प्रसिद्ध कथाकार), विशिष्ठ अतिथि प्रो. निरंजन कुमार (हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय) एवं अध्यक्षता प्रो. कैलाश नारायण तिवारी (कुलाधिपति थावे विद्यापीठ, बिहार) ने की. संगोष्ठी का प्रारंभ दीप प्रज्ज्वलन व अतिथि सत्कार से किया गया. श्री बलराम ने अपने वक्तव्य में बताया कि उन्होंने अपने रचनात्मक कार्य के माध्यम से किस प्रकार वैश्विक स्तर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार में योगदान दिया है. उन्होंने हिंदी भाषा के प्रति अपनी चिंता जाहिर करते हुए कहा कि हिंदी को सरकार ने राजभाषा का दर्जा तो दे दिया लेकिन अभी हमारी जनता ने हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में नहीं अपनाया है. अपने अनुभवों के आधार पर उन्होंने बताया कि भारत से बाहर लोग हिंदी भाषा का प्रयोग भलीभांति करते हैं. प्रो. निरंजन कुमार ने बताया कि हिंदी को भाषा और साहित्य से अलग और भी अनेक आयामों में देखने की जरुरत है, जैसे ज्ञान-विज्ञान, अर्थ जगत, सोशल मीडिया, सिनेमा, बाजार, टेक्नोलॉजी आदि. उनका मानना है कि हिंदी भाषा ने सिनेमा, टेक्नोलॉजी, अनुवाद, शिक्षा और राजनीति के माध्यम से वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाई है. उन्होंने कहा कि हिंदी संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बने ऐसी उम्मीद हमको करनी चाहिए. प्रो. निरंजन ने जोर देकर कह कि हमें अंगद की तरह पैर ज़माना है तो शिक्षक, विद्यार्थी और हिंदी भाषी लोगों को आगे आना होगा. प्रो. कैलाश नारायण तिवारी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में बताया कि 'हिंदी प्रेम' हिंदी भाषी भारतीयों से अधिक विदेशी (हिंदी सीखने वाले) लोगों में देखी जा रही है. उन्होंने अपने ही देश में हिंदी की स्थिति को चिंताजनक बताया. उनका मानना है कि हिंदी के आगे अंग्रेजी भाषा आ गई है, अंग्रेजी बोलचाल में आ गई है, जीवन में आ गई है. अंग्रेजी की टक्कर में हिंदी हारती नजर आ रही है. इस स्थिति से उभरने के लिए हिंदी के प्रति लोगों में आत्मविश्वास होना चाहिए, जो अभी नजर नहीं आ रहा है. संगोष्ठी के अंत में डॉ. विभा ठाकुर ने धन्यवाद ज्ञापित किया.

प्रो. कैलाश नारायण तिवारी प्रो. निरंजन,प्रो. कैलाश नारायण तिवारी और श्री बलराम के साथ हिंदी विभाग

- **विशिष्ठ व्याख्यान :–** 28 सितम्बर, 2019 को हिंदी साहित्य परिषद, कालिंदी महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) की ओर से एक विशिष्ट व्याख्यान 'हिंदी : कल, आज और कल' विषय पर सम्पन्न हुआ। जिसमें विशिष्ट वक्ता के रूप में प्रो. पूरन चंद टंडन (अध्यक्ष, शासी निकाय, कालिंदी महाविद्यालय) मौजूद थे, साथ में डॉ. अंजुला बंसल (प्राचार्या, कालिंदी महाविद्यालय) एवं डॉ. मंजु शर्मा (प्रभारी, हिंदी विभाग) उपस्थित रहीं। मंच संचालन बलजीत कौर ने किया। व्याख्यान का प्रारंभ दीप प्रज्ज्वलन व अतिथि सत्कार से किया गया। प्रो. पूरन चंद टंडन ने अपने व्याख्यान में कहा कि जब हम हिंदी भाषा को याद करते हैं तो अनुप्रयोग के संदर्भ में याद करते हैं। उन्होंने बताया कि 'हिंदी' साहित्य की भाषा के रूप में लगभग एक हजार साल बिता चुकी है। हिंदी साहित्य के सन्दर्भ में आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक प्रयोग की जाने वाली हिंदी भाषा के विभिन्न रूपों की तथ्यात्मक जानकारी विद्यार्थियों के समक्ष रखी, साथ ही वर्तमान समय में हिंदी भाषा के महत्व को रेखांकित किया। अपने व्याख्यान में आगे उन्होंने कहा कि हमको अनुवाद के माध्यम से दूसरी भाषाओं से ज्ञान आयात करना करना चाहिए। आज हिंदी की स्थिति अनुवाद के माध्यम से बेहतर हुई है। प्रो. टंडन ने कहा कि आज भी हम प्रयोग की भाषा सीख नहीं पाए हैं, इसलिए आवश्यक यह है कि हम को प्रयोग की भाषा में पारंगत होना चाहिए। आज हिंदी का प्रचार-प्रसार विश्व स्तर पर बढ़ तो अवश्य रहा है, लेकिन भारत में ही लोग पूरी तरह से आत्मसात नहीं कर पाएँ हैं, हम सभी को राष्ट्र के सम्मान के साथ-साथ देश की राष्ट्र-भाषा का भी सम्मान करना चाहिए। अभी हिंदी भाषा को और आगे बढ़ाने की जरूरत है इसके लिए हमको हमारी सपनों की भाषा हिंदी को आत्मसात करने की आवश्यकता है, हिंदी भाषा में अगर हम सभी बढ़-चढ़ कर काम करेंगे तो हिंदी का परचम पूरे विश्व में और अधिक मजबूती से लहराएगा।

प्रो. पूरन चंद टंडन

कार्यक्रम के दौरान हिंदी विभाग के शिक्षक

- **एक-दिवसीय अंतरराष्ट्रीय व्याख्यान माला :-** 6 मार्च, 2020 को हिंदी साहित्य परिषद्, कालिंदी महाविद्यालय द्वारा 'कहानी कला के विविध आयाम' विषय पर एक-दिवसीय अंतरराष्ट्रीय व्याख्यान माला-4 का आयोजन किया गया. जिसमें वक्ता के रूप में डॉ. अरुणा सब्बरवाल (प्रवासी साहित्यकार, ब्रिटेन) विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. रवि चतुर्वेदी (खेल पत्रकार) अध्यक्ष के रूप में प्रो. पूरन चंद टंडन, (अध्यक्ष, शासी निकाय, कालिंदी महाविद्यालय) एवं डॉ. अंजुला बंसल (प्राचार्या, कालिंदी महाविद्यालय) की गरिमामय उपस्थिति रही. कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन एवं अतिथि सत्कार से की गई. डॉ. अरुणा सब्बरवाल ने अपने व्याख्यान में कहा भारत में युवा वर्ग हिंदी भाषा में बात न करके अंग्रेजी भाषा में बात करता है, जो की निराशाजनक है. उन्होंने कहा की हम सभी को अपनी मातृभाषा हिंदी में बात करनी चाहिए, जिससे हिंदी का मान सम्मान बढाया जा सके. उन्होंने कहा कि हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में प्रवासी भारतीय अपना बखूबी योगदान दे रहे हैं. उन्होंने अनेक ऐसी संस्थानों के नाम गिनाये जो हिंदी के लिए विदेशों में लगातार काम करती हैं. अपने व्याख्यान में आगे उन्होंने कहा की मेरी कहानीयां मुख्य रूप से सामाजिक मुद्दों पर आधारित होती हैं, जिसमें मुख्य रूप से स्त्री मन की संवेदनाओं को व्यक्त करने वाली कहानियाँ हैं. इसके बाद उन्होंने अपनी कहानी 'उड़ारी' का पाठ किया तथा साथ ही कहानी की रचना प्रक्रिया पर बात की. इसके बाद डॉ. रवि चतुर्वेदी ने अपने व्याख्यान में कहा कि किस प्रकार उन्होंने क्रिकेट में अंग्रेजी कमेंटेटर के बीच में अपनी हिंदी कमेंटरी की जगह बनाई और किस प्रकार लोगों ने हिंदी कमेंटरी को स्वीकार किया. उन्होंने कमेंटरी को महाभारत के पात्र संजय से जोड़ा और क्रिकेट के थर्ड अम्पायर को शिवजी के तीसरे नेत्र से जोड़कर बताया. उन्होंने बताया कि भारत की छवि को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ऊँचा करने में महिलाओं का बड़ा योगदान है. खेलों में स्त्रियों के योगदान की प्रशंसा करते हुए कई महिला खिलाडियों के नाम गिनाये. इसके बाद प्रो. पूरन चन्द टंडन ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि साहित्य में वैसे तो सभी विधाओं का महत्व है लेकिन कहानी का अपना एक अलग स्थान है, एक अलग समाज है, एक बड़ा पाठक वर्ग है. प्रो. टंडन ने कहानी की

रचना प्रक्रिया पर बात करते हुए कहा की कहानी का विषय किस प्रकार के हो सकते हैं, समाज के कौन-कौन से मुद्दों पर कहानियां लिख सकते हैं और उन राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक मुद्दों में कहानी तत्व किस प्रकार से पिरोया जा सकता है. प्रो. टंडन ने आगे अपने वक्तव्य में विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा की आपको अपनी सृजनात्मक क्षमता को विकसित करना चाहिए, कहानियाँ लिखने की कोशिश करनी चाहिए. मंच संचालन हेमंत रमण रवि ने किया तथा व्याख्यान के अंत में हिंदी विभाग की प्रभारी डॉ. मंजु शर्मा ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया.

डॉ. अरुणा सब्बरवाल डॉ. अंजुला बंसल(प्राचार्या) डॉ. मंजु शर्मा

- नाट्य प्रदर्शन - 9 नवंबर, 2019 को (समय- 12.30-3.30) हिंदी साहित्य परिषद की ओर से हिंदी विशेष तृतीय वर्ष की छात्राओं को 'हिंदी नाटक और एकांकी' पाठ्यक्रमानुसार 'बकरी' और 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक प्रोजेक्टर के माध्यम से सेमिनार कक्ष में दिखाए गए। नाट्य प्रदर्शन के दौरान डॉ. मंजू शर्मा छात्राओं को नाटक की बारीकियों से अवगत कराती रही। बीच-बीच में छात्राएं भी विचारोत्तेजक प्रश्न करती रही। डॉ. शर्मा सहज भाव से उनकी जिज्ञासाओं का शमन की। छात्राओं का मानना रहा कि इस तरह से तकनीकी पठन-पाठन से विषय से प्रति रोचकता पैदा होती है।

नाट्य प्रदर्शन के अवसर पर डॉ. मंजु शर्मा और छात्राएं

- एक-दिवसीय वेबिनार :– 20 मई, 2020 को हिंदी साहित्य परिषद, कालिंदी कॉलेज की ओर से एक-दिवसीय वेबिनार 'हिंदी में रोजगार की संभावनाएं' विषय पर आयोजित किया गया. जिसमें मुख्य वक्ता प्रो. पूरन चंद टंडन (हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय) एवं अतिथि वक्ता के रूप में श्री कृष्णकांत (पत्रकार, आज तक समूह) की गरिमामयी उपस्थिति रही. वेबिनार के प्रारंभ में कालिंदी कॉलेज की प्राचार्या डॉ. अंजुला बंसल और हिंदी विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. मंजु शर्मा ने वक्ताओं का स्वागत किया. प्रो. पूरन चंद टंडन ने अपने व्याख्यान में कहा कि आज के समय में रोजगार प्राप्त करने की चुनौतियाँ सभी क्षेत्रों में हैं. हिंदी में भी चुनौतियाँ हैं, लेकिन साथ-साथ हिंदी में रोजगार के बहुत सारे अवसर भी हैं. बस जरुरत है विद्यार्थियों को रोजगार के अनुसार अपने आप को तैयार करना. उन्होंने बताया कि विद्यार्थियों कप अपनी प्रतिभा पहचानकर ही रोजगार के क्षेत्र का चुनाव करना चाहिए. प्रो. टंडन ने बताया कि शिक्षण, रचनात्मक लेखन, पत्रकारिता, अनुवाद, प्रकाशन, फिल्म, विज्ञापन, बैंक, खेल, पर्यटन, गायन आदि अनेक हिंदी के ही क्षेत्र हैं जिनमें कोई भी अपना कैरियर बना सकता है.
कृष्णकांत ने विषय पर अपनी बात रखते हुए कहा कि आज के समय में हिंदी में रोजगार के अनेक नए मार्ग खुल गए हैं और बहुत से लोग इनमें अपना रोजगार तलाश रहे हैं. उन्होंने बताया कि डिजिटल प्लेटफॉर्म पर रोजगार की असीम संभावनाएं हैं. आज के समय में मनोरंजन के क्षेत्र में डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म (OTT) बुत तेजी से उभर रहा है. जिसके विभिन्न कार्यक्रमों के लिए हम संवाद, पटकथा या हिंदी गाने लिख सकते हैं. आज बहुत सारी मल्टीनेशनल कंपनियां हैं जिनको अपने ग्राहकों तक पहुँचने के लिए हिंदी माध्यम अपनाना पड़ता है. उन सभी को हिंदी का ज्ञान रखने वाले लोगों की जरुरत होती है. आज के समय में कंटेंट राइटिंग, ऑनलाइन ट्युटोरियल, ब्लॉग लेखन, एंकर, रिपोर्टर, फिल्म लेखन, मीडिया लेखन, राजभाषा अधिकारी, हॉटल मेनेजमेंट, प्रोद्योगिकी में रोजगार की बहुत संभावनाएं हैं. इसके लिए हमको तकनीकी रूप से भी मजबूत होना होगा. डॉ. रक्षा गीता ने मंच संचालन एवं डॉ. विभा ठाकुर ने धन्यवाद ज्ञापित किया.

प्रो. पूरन चंद टंडन कृष्णकां त

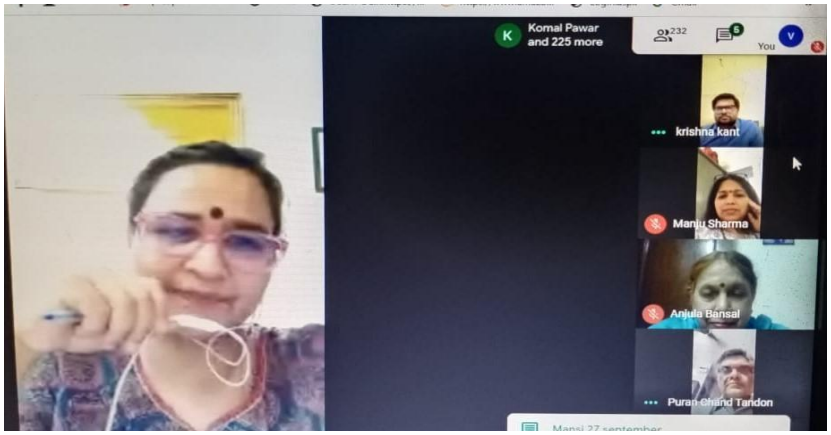

डॉ.रक्षा गीता

- **अभिभावक-शिक्षक बैठक :-** 9 नवंबर, 2019 को कालिंदी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में अभिभावक-शिक्षक बैठक कक्ष संख्या TRI-9 में रखी गई । जिसमें स्नातक हिंदी विशेष प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं बी.ए. प्रोग्राम के हिंदी विषय पढ़ने वाले विद्यार्थी अपने अपने अभिभावकों के साथ उपस्थित हुए। हिंदी विभाग से विभाग की प्रभारी डॉ. मंजु शर्मा, डॉ. रक्षा गीता, डॉ. संजय, डॉ. ममता चौरसिया, डॉ. सुरेश चंद मीणा एवं नवनीता बैठक में उपस्थित रहे। शिक्षकों और अभिभावकों ने विद्यार्थियों की पढ़ाई को लेकर गंभीर बातचीत की एवं अभिभावकों का कॉलेज और उनके उनके बच्चों की पढ़ाई से संबंधित फीडबैक लिया गया। बैठक प्रभावशाली, उपयोगी एवं उद्देश्यपूर्ण रही।

अभिभावक-शिक्षक बैठक

हिंदी साहित्य परिषद् द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताएं

- **रंगोली प्रतियोगिता :-** 12 सितम्बर, 2019 को 'हिंदी हैं हम' विषय पर सुबह 11 बजे रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. जिसमें स्नातक प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष की छात्राओं ने सक्रिय भागीदारी की. प्रतियोगिता में 15 छात्राओं ने भाग लिया. प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार है-
  प्रथम पुरस्कार - कविता सैनी और रितु (तृतीय वर्ष) द्वितीय पुरस्कार- नेहा और शिवानी (तृतीय वर्ष) तृतीय पुरस्कार - रितिका और पूनम (प्रथम वर्ष)
  सांत्वना पुरस्कार - मोहिनी और नेहा (प्रथम वर्ष)

- पोस्टर प्रतियोगिता :- 12 सितम्बर, 2019 को 'ग्लोबल होती हुई हिंदी' विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन कक्ष संख्या TRI-4 में संपन्न हुआ. इस प्रतियोगिता में 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया. प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार है -
  प्रथम पुरस्कार - अंजलि रानी (तृतीय वर्ष)
  द्वितीय पुरस्कार – कोमल (तृतीय वर्ष)
  तृतीय पुरस्कार - बबली (प्रथम वर्ष)
  सांत्वना पुरस्कार – उर्मिला (द्वितीय वर्ष) शिवानी (तृतीय वर्ष)
  रजनी (तृतीय वर्ष)

प्रतियोगिता के अवसर पर छात्राएं

- स्लोगन प्रतियोगिता :- 14 सितंबर, 2019 को हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में स्लोगन प्रतियोगिता आयोजन किया गया, जिसमें 15 प्रतिभागियों ने भाग लिया. स्लोगन की मौलिकता, सृजनात्मकता और सजावट की दृष्टि से निर्णय दिया गया. परिणाम इस प्रकार है -
  प्रथम पुरस्कार – कोमल (तृतीय वर्ष)
  द्वितीय पुरस्कार – नूरजहाँ (तृतीय वर्ष)
  तृतीय पुरस्कार – शिवानी (तृतीय वर्ष)
  सांत्वना पुरस्कार – नेहा रामकवार (तृतीय वर्ष)

- रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता :– 28 सितंबर, 2019 को हिंदी साहित्य परिषद की ओर से रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल की भूमिका प्रो. पूरन चंद टंडन और डॉ. अंजुला बंसल ने निभाई. प्रतियोगिता में पाँच प्रतिभागी पुरुस्कृत किए गए। रचनात्मक लेखन का परिणाम इस प्रकार है -
  प्रथम पुरस्कार - प्रिया मिश्रा (तृतीय वर्ष)
  द्वितीय पुरस्कार - कविता सैनी (तृतीय वर्ष)
  तृतीय पुरस्कार - शिवानी कुमारी (तृतीय वर्ष)
  सांत्वना पुरस्कार (एक) - रितु कुमारी (तृतीय वर्ष)
  सांत्वना पुरस्कार (दो) - शाम्भवी (तृतीय वर्ष)

- अंतर-महाविद्यालयी वाद-विवाद प्रतियोगिता :- 25 अक्टूबर, 2019 को कालिंदी महाविद्यालय में दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी के सहयोग से 'स्वच्छता अभियान व्यवस्थागत नहीं व्यक्तिगत होना चाहिए' विषय पर एक अन्तरमहाविद्यालयी वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में विशिष्ट अतिथि

के रूप में प्रो. पूरन चंद टंडन (हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय) की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस अवसर पर कालिंदी कॉलेज की प्राचार्या डॉ. अंजुला बंसल, प्रतियोगिता की संयोजिका डॉ. मंजु शर्मा (प्रभारी, हिंदी विभाग) तथा निर्णायक के रूप में डॉ. साक्षी एवं श्री दीपक उपस्थित रहे। प्रतियोगिता की शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन एवं अतिथि सत्कार के साथ हुई। मंच संचालन हेमन्त रमण रवि ने किया। प्रतियोगिता में विभिन्न महाविद्यालयों से आए कुल पच्चीस दलों ने विषय के पक्ष और विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत किए। परिणाम घोषित करने से पूर्व प्रो. पूरन चंद टंडन ने वाद-विवाद प्रतियोगिता के विषय को स्पष्ट करते अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने बताया कि प्रतिभागियों को वाद-विवाद प्रतियोगिता में किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। इसके बाद प्राचार्या डॉ. अंजुला बंसल ने परिणाम घोषित किए. जिसमें कुल आठ प्रतिभागियों को विजयी घोषित किया गया। परिणाम घोषणा के पश्चात् विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार राशि एवं सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। अंत में हिंदी विभाग प्रभारी एवं प्रतियोगिता की संयोजिका डॉ. मंजु शर्मा ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापित किया। पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रतिभागी इस प्रकार हैं -

प्रथम पुरस्कार - किम कल्याणी (कालिंदी कॉलेज)
निहारिका (रामजस कॉलेज)
द्वितीय पुरस्कार - अदिती (जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज)
मान्यवर (रामलाल आनंद कॉलेज)
तृतीय पुरस्कार - कार्तिक (मोतीलाल कॉलेज)
प्राची (कालिंदी कॉलेज)
प्रोत्साहन पुरस्कार - कृतिका (कालिंदी कॉलेज)
वर्षा (जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज)

पुरस्कार विजेता प्रतिभागियों के साथ निर्णायक मंडल

- वर्तनी प्रतियोगिता :- 31 जनवरी 2020 को हिंदी साहित्य परिषद् द्वारा प्रातः 10.30 बजे कक्ष संख्या AB-12 में वर्तनी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. प्रतियोगिता में हिंदी विशेष की कुल 33 छात्राओं ने भाग लिया. परिणाम इस प्रकार है -
  प्रथम पुरस्कार - अंजली रानी (6099) तृतीय वर्ष
  द्वितीय पुरस्कार - गायत्री मेहता (6015) तृतीय वर्ष
  तृतीय पुरस्कार - शिखा (6035) तृतीय वर्ष

- विज्ञापन लेखन प्रतियोगिता :- 3 फरवरी, 2020 को हिंदी साहित्य परिषद् द्वारा दोपहर 1:00 बजे, कक्ष संख्या AB:12 में विज्ञापन लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस प्रतियोगिता में हिंदी विशेष की कुल 15 छात्राओं ने भाग लिया. परिणाम इस प्रकार है -
  प्रथम पुरस्कार - नैना जैन (18516046) द्वितीय वर्ष
  द्वितीय पुरस्कार - अंजली रानी (17516099) तृतीय वर्ष
  तृतीय पुरस्कार - सविता (18516062) द्वितीय वर्ष
  सांत्वना पुरस्कार - इशिका रंधावा (19516012) प्रथम वर्ष

- वाद-विवाद प्रतियोगिता :- 11 फरवरी, 2020 को हिंदी साहित्य द्वारा प्रातः 9:30 बजे 'क्या सोशल मीडिया जनता को दिग्भ्रमित कर रहा है' विषय पर कक्ष संख्या AB:12 में वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. परिणाम इस प्रकार है -
  प्रथम पुरस्कार - आशना (द्वितीय वर्ष) द्वितीय पुरस्कार - कविता सैनी (तृतीय वर्ष) तृतीय पुरस्कार - कोमल (द्वितीय वर्ष)
  सांत्वना पुरस्कार - पल्लवी

- स्वरचित कविता-पाठ प्रतियोगिता :- 12 फरवरी, 2020 को हिंदी साहित्य परिषद् द्वारा दोपहर 12:00 बजे, कक्ष संख्या AB:12 में स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. जिसमें हिंदी विशेष की कुल 16 छात्राओं ने भाग लिया. प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार है –
  प्रथम पुरस्कार - प्रियांशी (प्रथम वर्ष) द्वितीय पुरस्कार - शाम्भवी (प्रथम वर्ष) तृतीय पुरस्कार - सविता (द्वितीय वर्ष)
  सांत्वना पुरस्कार - खुशी (प्रथम वर्ष)

कविता पाठ के अवसर पर छात्राएं

- शोधपत्र प्रस्तुतिकरण प्रतियोगिता :- 14 फरवरी, 2020 को हिंदी साहित्य परिषद् द्वारा प्रातः 11 बजे कक्ष संख्या TRI:9 में शोध पत्र प्रस्तुतिकरण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस प्रतियोगिता में हिंदी विशेष के कुल 11 छात्राओं ने भाग लिया. परिणाम इस प्रकार है -
  प्रथम पुरस्कार - कोमल (द्वितीय वर्ष) द्वितीय पुरस्कार - कोमल (तृतीय वर्ष) तृतीय पुरस्कार - अंजली रानी (तृतीय वर्ष)
  सांत्वना पुरस्कार - पल्लवी (द्वितीय वर्ष)

शोध पत्र

प्रस्तुतीकरण के अवसर पर छात्राएं और निर्णायक मंडल

- सूचनापट्ट सजावट प्रतियोगिता :- 18 फरवरी, 2020 को हिंदी साहित्य परिषद् द्वारा दोपहर 12:00 बजे, कक्ष संख्या AB:12 एवं प्रशासनिक खंड में सूचनापट्ट सजावट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. जिसमें हिंदी विशेष की कुल 17 छात्राओं ने भाग लिया.

प्रथम पुरस्कार - कोमल (तृतीय वर्ष) कविता सैनी (तृतीय वर्ष) अंजली रानी (तृतीय वर्ष) एवं शिवानी कुमारी (तृतीय वर्ष)
द्वितीय पुरस्कार - गीता (द्वितीय वर्ष), नैना जैन (द्वितीय वर्ष) एवं कोमल (द्वितीय वर्ष)
तृतीय पुरस्कार - ज़ेबा (प्रथम वर्ष), शीतल (प्रथम वर्ष) निशा (प्रथम वर्ष) एवं खुशबू (प्रथम वर्ष)
प्रोत्साहन पुरस्कार – प्रिया मिश्रा (तृतीय वर्ष) प्राची शर्मा (तृतीय वर्ष) इशिका रंधावा (प्रथम वर्ष)

सूचना पट्ट सजावट प्रतियोगिता के अवसर पर

हिंदी विभाग, कालिंदी महाविद्यालय की छात्राओं का दिल्ली विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों में आयोजित प्रतियोगिताओं में भागीदारी इस प्रकार है :-

1. कविता प्रतियोगिता (आत्माराम सनातन धर्म महाविद्यालय)
   नाम/वर्ष अनुक्रमांक दिनांक उपलब्धि
   सुष्मिता (प्रथम वर्ष) 19516052 14 सितंबर,2019 भागीदारी
   प्राची शर्मा (तृतीय वर्ष) 17516071 14 सितंबर,2019 भागीदारी
2. कविता प्रतियोगिता (जानकी देवी मेमोरियल महाविद्यालय)
   सविता (द्वितीय वर्ष) 18516062 16 सितबर,2019 भागीदारी
   पल्लवी (द्वितीय वर्ष)
   कोमल जांगरा (तृतीय वर्ष)17516099 16 सितबर,2019 भागीदारी
   प्रीति शर्मा (तृतीय वर्ष 17516038 16 सितबर,2019 भागीदारी
   मेघा (द्वितीय वर्ष) 18516066 16 सितबर,2019 भागीदारी

3. रचनात्मक लेखन (आत्माराम सनातन धर्म महाविद्यालय)
   मधु (द्वितीय वर्ष) 18516033 17 सितंबर,2019 भागीदारी

4. शोधपत्र लेखन प्रतियोगिता (विवेकानंद महाविद्यालय)
   कविता सैनी (तृतीय वर्ष) 17516198 17 सितंबर,2019 भागीदारी
   कोमल (तृतीय वर्ष) 17516099 17 सितंबर,2019 भागीदारी

5. निबंध प्रतियोगिता (जानकी देवी मेमोरियल महाविद्यालय)
   प्राची शर्मा (तृतीय वर्ष) 17516071 17 सितंबर,2019 द्वितीय पुरस्कार
   अंजलि रानी (तृतीय वर्ष) 17 सितंबर,2019 भागीदारी
   कोमल (तृतीय वर्ष) 17516099 17 सितंबर,2019 भागीदारी

6. लोकगीत प्रतियोगिता (जानकी देवी मेमोरियल महाविद्यालय)
   अंजलि रानी (तृतीय वर्ष) 17 सितंबर,2019 भागीदारी

7. कविता प्रतियोगिता (जानकी देवी मेमोरियल महाविद्यालय)
   प्रीति शर्मा 17 सितंबर, 2019 भागीदारी
   कोमल (तृतीय वर्ष) 17 सितंबर, 2019 भागीदारी

8. स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता **(**शिवाजी महाविद्यालय**)**

प्राची शर्मा (द्वितीय वर्ष) 18516062 18 सितंबर,2019 भागीदारी

9. कविता प्रतियोगिता **(**शिवाजी महाविद्यालय**)**

प्राची शर्मा (तृतीय वर्ष) 17516071 18 सितंबर,2019 भागीदारी
सविता (द्वितीय वर्ष) 18516062 18 सितबर,2019 भागीदारी

10. लघु फिल्म प्रतियोगिता **(** शिवाजी महाविद्यालय**)**

प्राची शर्मा (तृतीय वर्ष) 17516071 19 सितंबर,2019 द्वितीय पुरस्कार
अंजलि रानी (तृतीय वर्ष) 19 सितंबर,2019 द्वितीय पुरस्कार
कविता सैनी (तृतीय सैनी) 17516198 19 सितंबर,2019 द्वितीय पुरस्कार
सविता (द्वितीय वर्ष) 18516062 19 सितबर,2019 तृतीय पुरस्कार
हिना (द्वितीय वर्ष) 18516011 19 सितंबर,2019 तृतीय पुरस्कार
लक्ष्मी (द्वितीय वर्ष) 18516050 19 सितंबर,2019 तृतीय पुरस्कार
गीता (द्वितीय वर्ष) 18516047 19 सितंबर,2019 तृतीय पुरस्कार
सृष्टि (द्वितीय वर्ष) 18516067 19 सितंबर,2019 तृतीय पुरस्कार

11. निबंध लेखन प्रतियोगिता **(**राजधानी महाविद्यालय**)**

साक्षी माहाल (तृतीय वर्ष) 24 सितंबर,2019 भागीदारी
रूपम शर्मा (तृतीय वर्ष) 24 सितंबर,2019 भागीदारी
गायत्री (तृतीय वर्ष) 24 सितंबर,2019 भागीदारी
प्रिया मिश्रा (तृतीय वर्ष) 24 सितंबर,2019 भागीदारी
नूरजहाँ (तृतीय वर्ष) 24 सितंबर,2019 भागीदारी
प्रीति (तृतीय वर्ष) 24 सितंबर,2019 भागीदारी
ज्योति (तृतीय वर्ष) 24 सितंबर,2019 भागीदारी
अंजलि रानी (तृतीय वर्ष) 24 सितंबर,2019 भागीदारी
सविता (द्वितीय वर्ष) 18516062 24 सितबर,2019 भागीदारी
आँचल (द्वितीय वर्ष) 18516028 24 सितंबर,2019 भागीदारी
पल्लवी (द्वितीय वर्ष) 18516032 24 सितंबर,2019 भागीदारी

12. कविता-पाठ प्रतियोगिता **(**राजधानी महाविद्यालय**)**

प्राची शर्मा (तृतीय वर्ष) 17516071 24 सितंबर,2019 भागीदारी
सविता (द्वितीय वर्ष) 18516062 24 सितबर,2019 भागीदारी

13. प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता **(**राजधानी महाविद्यालय**)**

कविता सैनी (तृतीय वर्ष) 17516198 26 सितंबर,2019 तृतीय पुरस्कार
शिवानी कुमारी (तृतीय वर्ष) 26 सितंबर,2019 तृतीय पुरस्कार
अंजलि रानी (तृतीय वर्ष) 17516099 26 सितंबर,2019 भागीदारी
अनिशा (तृतीय वर्ष) 17516046 26 सितंबर,2019 भागीदारी
रितु कुमारी (तृतीय वर्ष) 26 सितंबर,2019 भागीदारी
रूपम शर्मा (तृतीय वर्ष) 17516036 26 सितंबर,2019 भागीदारी
साक्षी माहाल (तृतीय वर्ष) 17516065 26 सितंबर,2019 भागीदारी
सविता (द्वितीय वर्ष) 18516062 26 सितंबर,2019 भागीदारी
आँचल (द्वितीय वर्ष) 18516028 26 सितंबर,2019 भागीदारी
प्रियंका गोराई (द्वितीय वर्ष) 17516071 26 सितंबर,2019 भागीदारी
पल्लवी (द्वितीय वर्ष) 18516032 26 सितंबर,2019 भागीदारी
सृष्टि यादव (द्वितीय वर्ष) 17516071 26 सितंबर,2019 भागीदारी
हिना (द्वितीय वर्ष) 18516011 26 सितंबर,2019 भागीदारी
लक्ष्मी द्वितीय वर्ष) 18516050 26 सितंबर,2019 भागीदारी
अंजलि (द्वितीय वर्ष) 18516013 26 सितंबर,2019 भागीदारी

हिंदी साहित्य परिषद् द्वारा लॉकडाउन के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताएं

- ऑनलाइन एकल गायन प्रतियोगिता :- 26 अप्रैल 2020 को लॉकडाउन के दौरान हिंदी साहित्य परिषद् द्वारा ऑनलाइन एकल गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. गायन का विषय क्षेत्र लोकगीत (फाग,कजरी,कटाई,छंटाई,घुडचढ़ी,विदाई,टप्पे आदि) साहित्यिक गीत,पद,दोहे व चौपाई आदि रखा गया. इस प्रतियोगिता में कुल 16 प्रतिभागियों ने भाग लिया.
  प्रथम पुरस्कार – शाम्भवी (195160620) प्रथम वर्ष
  द्वितीय पुरस्कार – दिव्या बुढ़ (19516073) प्रथम वर्ष
  तृतीय वर्ष – पूजा परेवा (17516083) तृतीय वर्ष
  प्रोत्साहन पुरस्कार – गीता (18516047) द्वितीय वर्ष

- ऑनलाइन एकल नृत्य प्रतियोगिता :- 1 मई, 2020 को लॉकडाउन के दौरान हिंदी साहित्य परिषद् द्वारा एकल नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस प्रतियोगिता में कुल 10 प्रतिभागियों ने भाग लिया. परिणाम इस प्रकार हैं.
  प्रथम पुरस्कार – पूजा (17516088) तृतीय वर्ष
  द्वितीय पुरस्कार – कविता सैनी (17516098) तृतीय वर्ष
  तृतीय पुरस्कार – दीपिका राठी (17516087) तृतीय वर्ष
  सांत्वना पुरस्कार – गायत्री मेहता (17516015) तृतीय वर्ष

- ऑनलाइन मास्क प्रतियोगिता :- 5 मई 2020 को लॉकडाउन के दौरान हिंदी साहित्य परिषद् के द्वारा ऑनलाइन मास्क प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस प्रतियोगिता में कुल 10 प्रतिभागियों ने भाग लिया. प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार है.
  प्रथम पुरस्कार – हिमांशी गोयल (175160) तृतीय वर्ष
  द्वितीय पुरस्कार – गायत्री मेहता (175160) तृतीय वर्ष
  तृतीय पुरस्कार – सविता (18516062) द्वितीय वर्ष
  सांत्वना पुरस्कार- 1.शिवानी कुमारी (17516030) तृतीय वर्ष
  2. उर्मिला (19516037) प्रथम वर्ष

आगामी सत्र में विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरण किया जायेगा.

धन्यवाद

हिंदी साहित्य परिषद,

हिंदी विभाग

अथिति वक्ताओं के साथ प्राचार्या डॉ. अंजुला बंसल और हिंदी विभाग के शिक्षक

डॉ. विभा ठाकुर के साथ छात्राएं

वाद- विवाद प्रतियोगिता के अवसर पर

वाद विवाद प्रतियोगिता के अवसर पर

कविताएँ

बाबा ऐसा क्यों किया

सुनो याद है वो पल जब बाबा ने पहली बार
गोद में उठाया था,
याद है वो पल जब बाबा ने पहली बार
गले से लगाया था,
याद है वो पल बाबा के इंतजार में शाम
हो जाती थी,
याद है वो पल जब बाबा की कहानियों के
साथ– साथ रात गुज़र जाती थी,
पर अब सब सूना– सूना है।
नहीं रहे वो पल ना रहीं वो याद,
क्योंकि बड़े जो हो चुके हैं अब हम अब वक़्त नहीं वक़्त के साथ गले से लगाने को।
बस सब सोच रहे हैं जल्दी से विदा कर
जाने को,
बाबा को अब इंतजार नहीं है हमारा, क्योंकि
उनके लिए यह घर नहीं हमारा
बाबा से बात अब भी होती है, पर उसमें
किस्से– कहानियाँ नहीं, दर्द की दास्ताँ होती है
क्यों, बाबा ऐसा क्यों किया अपनी इस
नन्हीं सी जान को खुद से इतना जुदा कैसे किया।
दिल का टुकड़ा थी ना मैं आपका, तो कैसे
य़ह दिल किसी और को सौंप दिया,
बाबा बताओगे नहीं आप ने ऐसा क्यों किया।

प्रियांशी शर्मा
बी. ए हिन्दी (विशेष) प्रथम वर्ष

प्राची शर्मा (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

परिंदा

एक दिन ये परिंदा, तेरी गुलामी की
जंजीरें तोड़ आज़ाद हो जाएगा
तू देखता ही रह जाएगा, और ये
आसमान छू जाएगा।
ये ही तुझे, असली आज़ादी का मतलब समझाएगा
या तो आज़ाद कर इस परिंदे को
वरना बाद में बहुत पछताएगा।
एक दिन ये परिंदा आज़ाद हो जाएगा
बहुत बंदिशें लगा तूने इस
परिंदे पर, अब वो भी तुझे बंदी बनाएगा।
अब तो सम्भल जा राक्षस, और
कितने ज़ख्म देगा।
तेरे दिए हुए ज़ख्मों को, ये तुझे ही लौटाएगा।
एक दिन ये परिंदा आज़ाद हो जाएगा
है घायल ये परिंदा, फिर भी
आज़ादी को जी जाएगा,
एक दिन ये परिंदा, तेरी गुलामी
की ज़ंजीरें तोड़ आज़ाद हो जाएगा
सम्भल जा बाद में तू पछताएगा।
एक दिन ये परिंदा आज़ाद हो जाएगा
मान ले तू, ये परिंदा तुझे भी हराएगा,
अपने जीवन में सफल होकर, पंख भी फैलेगा।
तू देखता ही रह जाएगा,
पिंजरे से आज़ाद ये हो जाएगा।
अंजली रानी बी. ए. हिन्दी (विशेष) तृतीय वर्ष

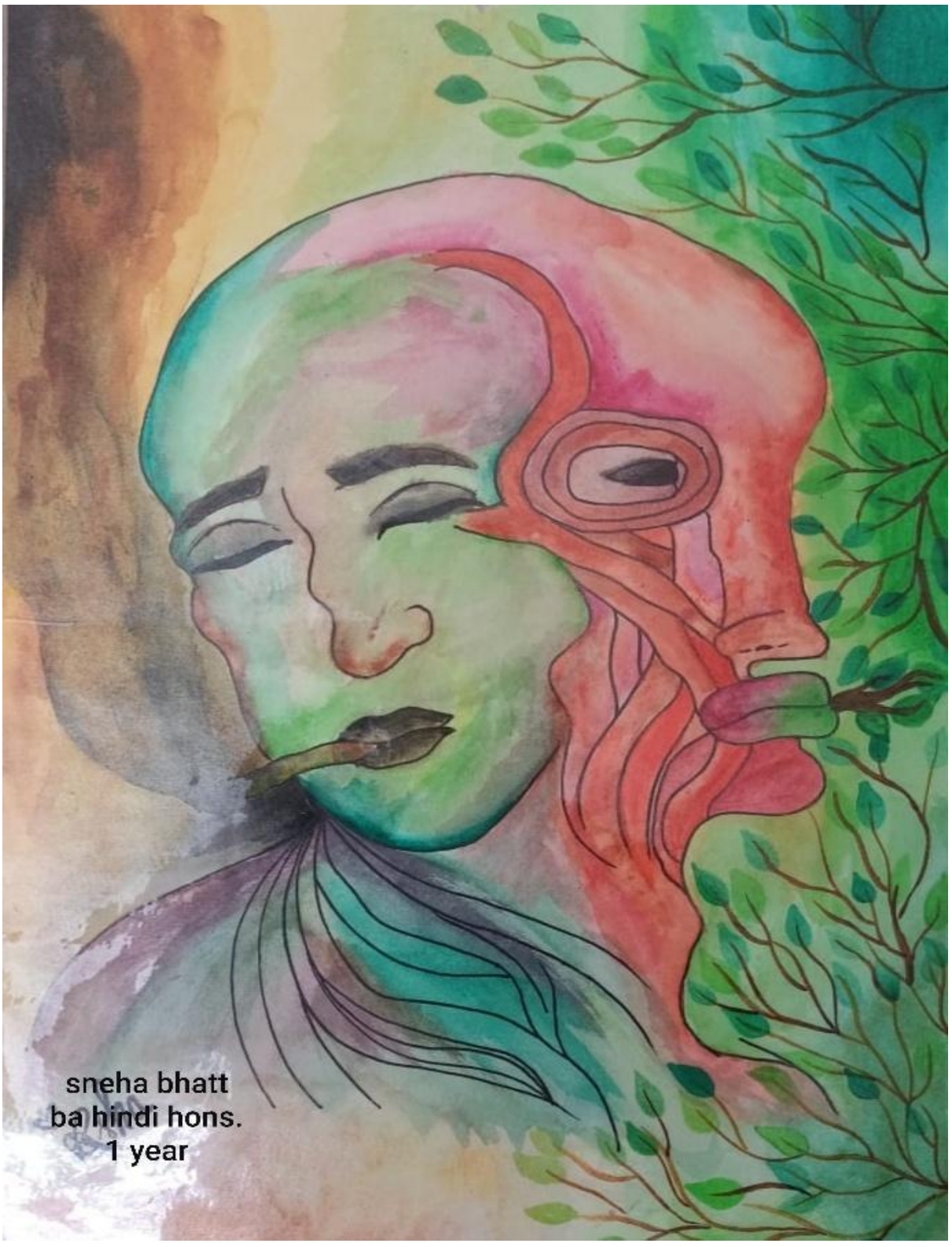
sneha bhatt
ba hindi hons.
1 year

फ़ुटपाथ

पेट में भूख, नेत्रों में सागर...

फटें वस्त्र और..फटी है चादर...।

धरती पर जो आखें मूँदता हैं..

बारिश में जो आसरा ढूंढता है..।

कह ना पाऊ,कैसे कहूं.... कैसा रहन सहन हैं साहब..,

मौत सा हर पल हैं.. बड़ा डरावना ये जीवन हैं साहब.. ।

ठंड में रजाई नहीं मिली...

बीमारी में दवाई नहीं मिली...।

जो देखो वही... मनमानी करता है...

इंसान हैं जनाब.. गुजारा करने के लिए..

गंदे नाली से पानी भरता हैं...।

देख ना पाऊ कैसे देखूं... बहुत दुखद रहन सहन हैं साहब...

मौत सा हर पल है... बड़ा डरावना ये जीवन हैं साहब.. ।

कोई ना जाने किस तरह उन्हे रौंदता गया...

सोते हुए बड़ी गाड़ी से कुचलता गया...।

पड़ी हुई लाशों को कपड़ा भी न नसीब हैं...

कंधे तो मिल जाते हैं लेकिन कफ़न नहीं नसीब हैं...।

तन पर वस्त्र नहीं... ना शव पर कफ़न हैं साहब... ।

मौत सा हर पल हैं साहब... बड़ा डरावना ये जीवन हैं साहब.. ।

सविता

हिंदी विशेष द्वितीय वर्ष

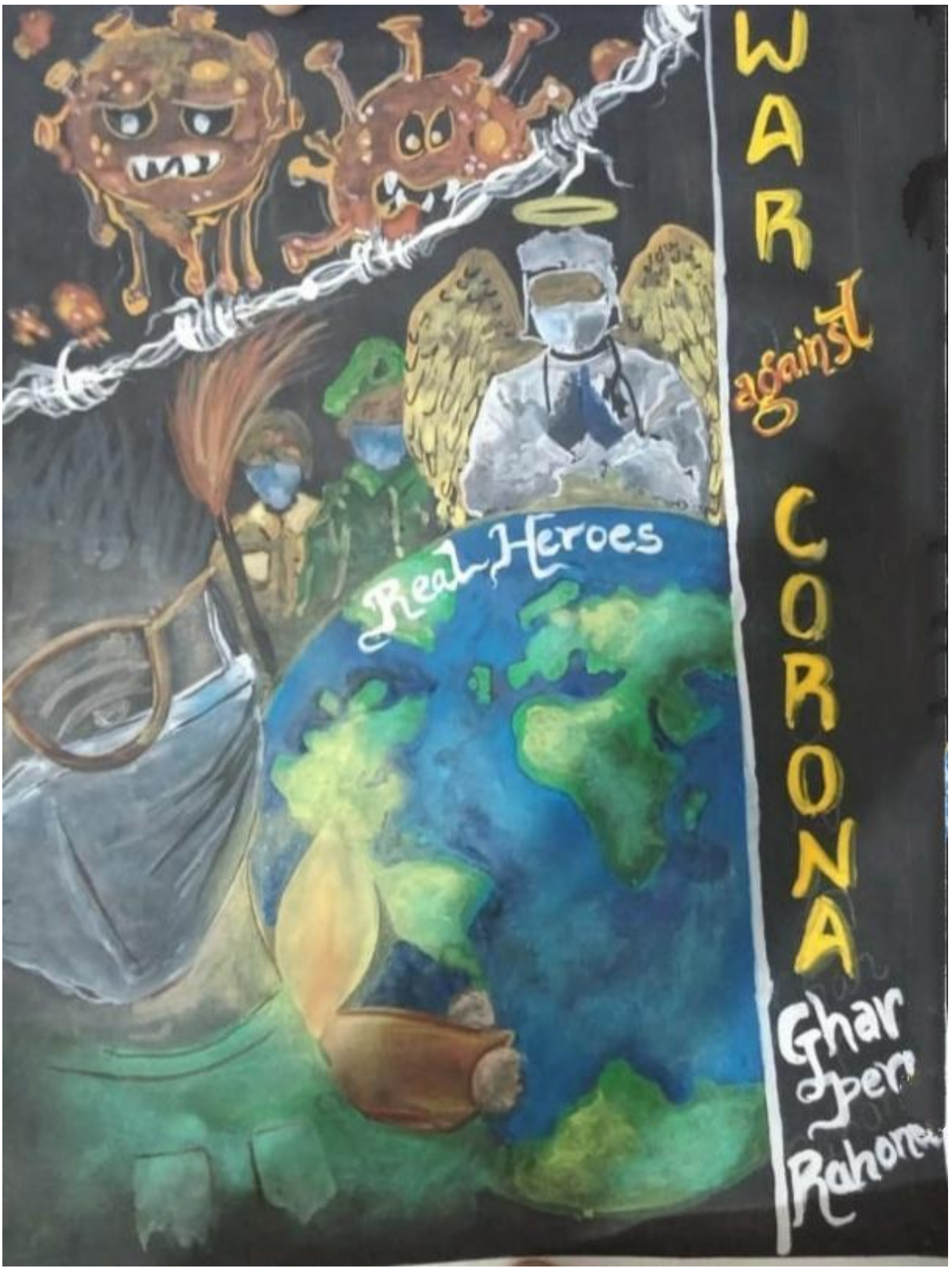

हिमांशी गोयल (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

बढ़ना है तुझे आगे की ओर

कर परिश्रम मंज़िल है दूर,
पाना है तुझे लक्ष्य, पहुंचना है उस छोर,
इसलिए हर हाल में ,बढ़ना है तुझे आगे की ओर।।
होगीं बाधाएँ राह में, ना होगा पथ आसान,
मिलेंगे काटे हर कदम पर,होगी परीक्षा तेरी संज्ञान,
ना होना निराश तू, देखकर दुखों का ज़ोर,
याद रख तो बस इतना कि बढ़ना है तुझे आगे की ओर।।
लड़खड़ाएंगे कदम ,यह सोच कर मत घबराना,,
पत्थर पड़े हैं पथ पर ,यह देखकर कदम वापस ना लाना ,
गिर भी जाए गर तू ,तो उठने की कोशिश कर पुरज़ोर,,
वापस उठ, खड़ा हो,, क्योंकि बढ़ना है तुझे आगे की ओर।।
खीचेंगे कुछ लोग तेरे कदमों को,
पुकारेंगे तुझे वापस,
करेंगे स्वांग अपनेपन का,बंधाएंगे तुझे ढांढस,
ना पलटकर देखना तू,
सीधे जाना रहा में इन सारी बातों को छोड़,
मंजिल मिलेगी तुझे,बस बढ़ना है आगे की ओर।।

कुछ मिलेंगे राह में, जो कांटों भरी राह में बिछाएंगे फूल,
बस वही है तेरे अपने, कर लेना पहचान मत जाना उन्हें भूल,
कर कद्र वक्त की,मत सब कुछ समय पर छोड़,,
बस चलता चल रहा में, बढ़ना है तुझे आगे की ओर।।

लगेंगी असफलताएं भी हाथ तेरे,
ना समझना उन्हें तेरी किस्मत,
हताश होकर बैठ ना जाना ,
क्योंकि वो नहीं तेरी जिंदगी के पन्नों का आखिरी खत,
यह सोच लेना बस अंत है तेरी परीक्षाओं का, समीप है मंजिल,
चलना तुझे अकेले हैं, यदि पाना है मंजर
पलटेगा वक्त, करेगा रुख तेरी ओर,
कसले कमर, क्योंकि बढ़ना तुझे आगे की ओर।।
मिलेगी अंधेरों में भी रोशनी की किरण,

उम्मीद कायम रख, रुकना नहीं कर लेना ये प्रण,

भरपूर मेहनत कर, हर रात की होगी एक नई भोर ,

बढ़ना है बढ़ना है बढ़ना है, बस बढ़ना है तुझे आगे की ओर।।

मोनिका सेन

बी.ए. हिंदी (विशेष) तृतीय वर्ष

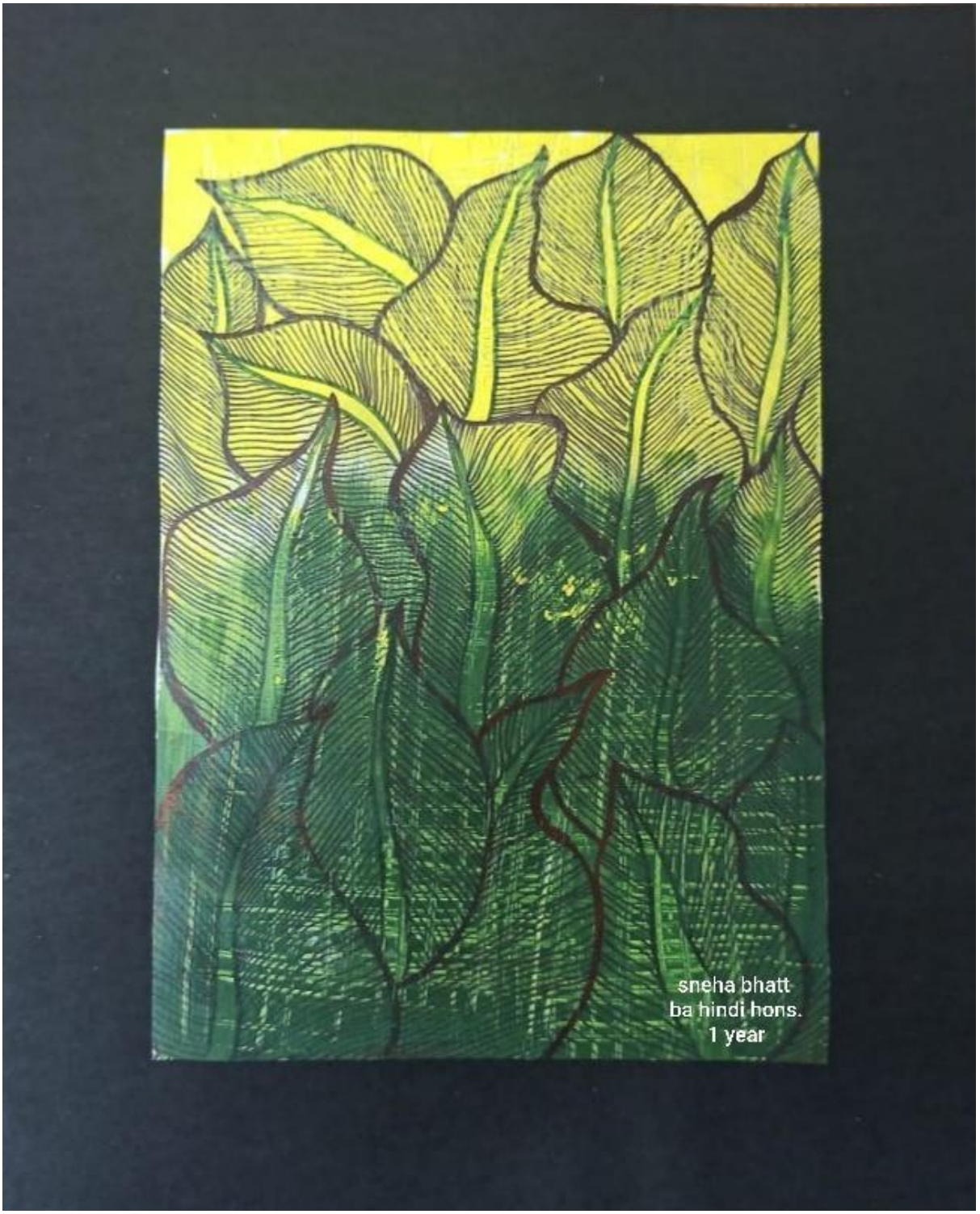
sneha bhatt
ba hindi hons.
1 year

नारी का नारा

लानत है तेरे नारी सम्मान पर....

यूँ तो नारी लगाते फिरते हो,

पर भरी सभा में निगाहों से दबोचते हो।

यदि देख लो तुम उन्हें छोटे कपड़ों में,

तो अपशब्द से उनके कानों को भर देते हो।

लानत है तेरे इस नारी सम्मान पर....

यूँ तो आंगन की शान मानते हो,

पर गालियों में भी तुम उन्हें ही घसीटते हो,

यदि शब्द कम पड़ते हैं तुम्हारी उन गालियों में

तो उनके कार्य पर तुम उँगली उठाते हो।

लानत है तेरे इस नारी सम्मान पर.....

शाम्भवी

बी. ए. हिन्दी (विशेष) प्रथम वर्ष

sneha bhatt
Ba.Hindi hons
1 year

जिंदगी में हार नहीं मानना

हार मिली तो क्या हुआ
हार मिली तो क्या हुआ
प्रताड़ना मिली तो क्या हुआ
प्रताड़ना मिली तो क्या हुआ
यूँ ही मौन रहकर दिल ही दिल में सिसकने वालों
उठो और जानो अपने अधिकारों के वारे में।
बिना लड़े ही सब कुछ त्याग देने वालों
जानो अपने कर्तव्यों के बारे में।
गिर भी जाओ तो उठो, और फिर नया
प्रयास करो।
एक बार फिर से अपना लक्ष्य संधान करो।
विजय! अवश्य तुम्हारे कदमों को चूमेंगी।
तुम अपने भीतर नित नया आत्मविश्वास भरो।

अंकिता सिंह
बी. ए. हिन्दी (विशेष) प्रथम वर्ष

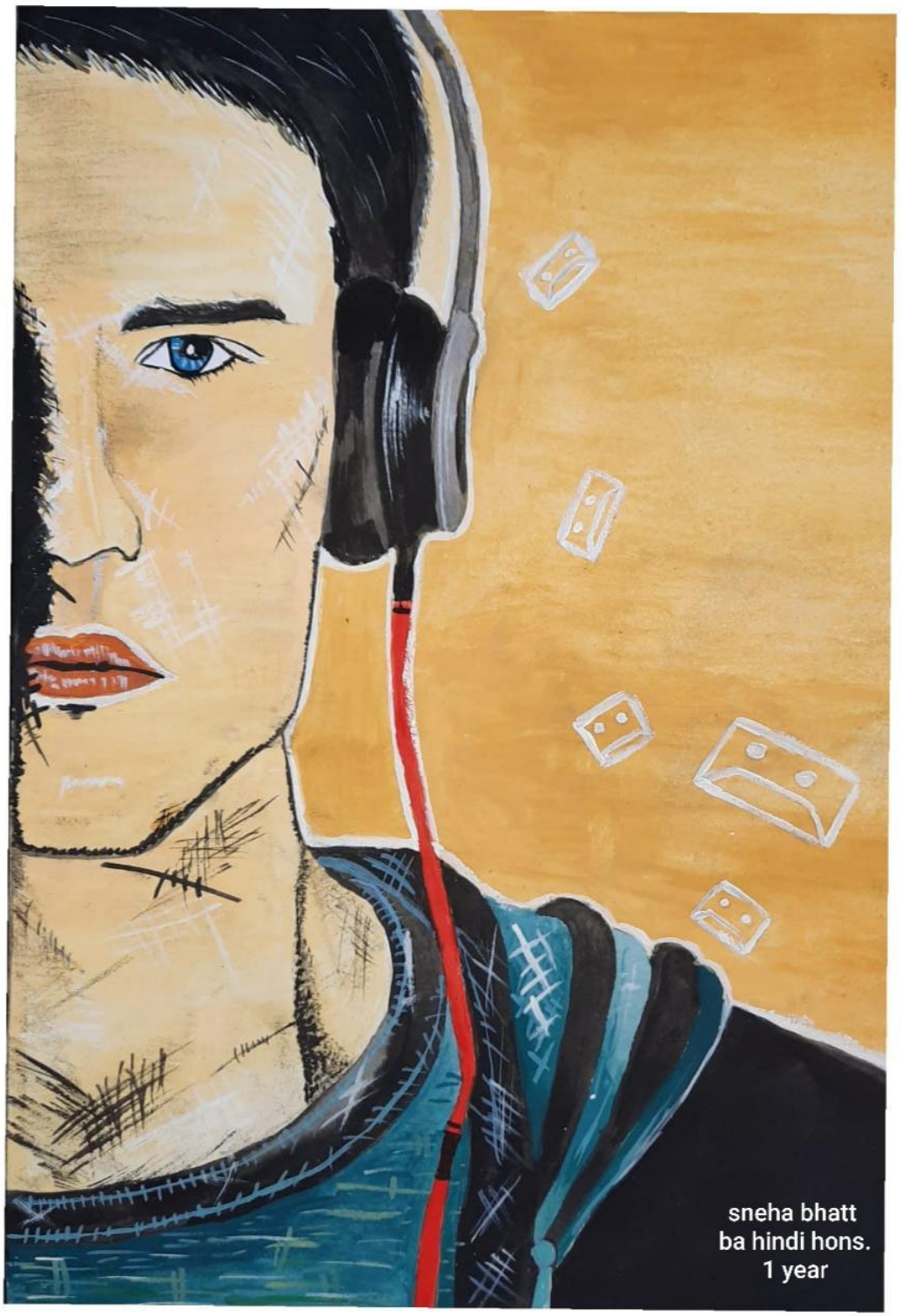
sneha bhatt
ba hindi hons.
1 year

दामिनी का दर्द

जन्म लिया तब सब खुश थे
मरी तो खुश हुए सब दरिन्दे,
मम्मी पापा की थी दुलारी
खुशियों से भरी थी मेरी अलमारी,

करती रही मैं मिन्नत पर मिन्नत,
याद न आई तुझे मेरी इज्ज़त
डरा देने वाली थी तेरी हैवानियत,
शायद तेरे दिल में बिल्कुल नहीं थी इंसानियत

तेरी भूख तेरी मस्ती
और समुद्र बीच मेरी कश्ती
मदद के बावजूद भी डूब गई मैं
तेरी नियत को नहीं पाई मैं भाँप
क्या शायद यही था मेरा पाप

या पाप था मेरा लड़की होना
हर बात पर सिर्फ रोना
अब मैं लड़ूंगी तेरे जैसे से भिड़ूंगी
याद दिलाउंगी तुझे भी
जन्मा है माँ से तू भी
वो भी एक नारी थी और मैं भी

होगी तेरी भी कोई बहन
मेरे जैसा ही होगा उसका रहन-सहन,
मुझ में उसकी झलक नहीं दिखती
तो मासूमियत ही देख लेता

जिंदा थी तब जूं तक न रेंगी
और मरने पर रो रहे नेता अभिनेता
मैं तो पहले ही हो चुकी थी चकनाचूर
इस में क्या बचा पाता मुझे भारत या सिंगापुर

मैं मरी सवा लाख और आएंगी

तेरे जैसे को सबक सिखाएंगी

अल्लाह मैं आखिरी हूँ

जो गुजरे इस दर्द से

लड़की मन बची रहे

इस राक्षस जैसे मर्द से

सविता

बी. ए. हिन्दी (विशेष) द्वितीय वर्ष

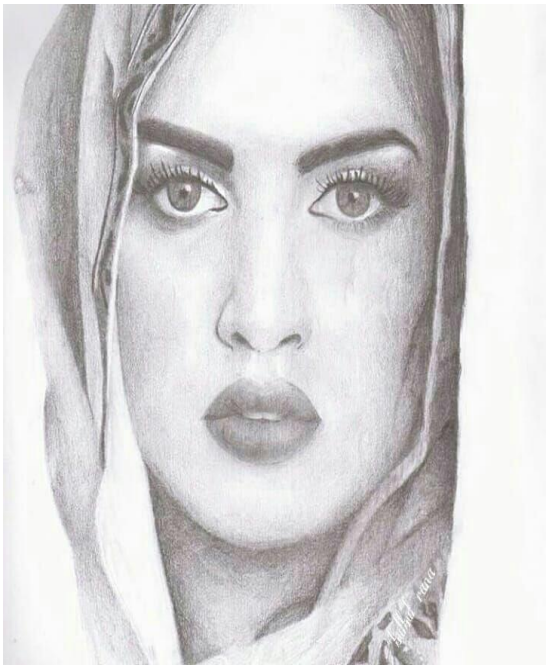

बुलबुल राना (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

पिता

इंसानियत के वज़ूद का आरंभ है पिता!

चरित्रों के निर्माण का प्रारम्भ है पिता।

संतानों की बचपन में शामिल नादान है पिता,

उनके हर उलझन का समाधान है पिता।

कर्मों के आरंभ की पहचान है पिता,

संतानों की खुशियों की शान है पिता।

दुनिया के हर ज्ञानों का ज्ञान है पिता,

संतानों के दिलों में बसा विज्ञान है पिता

है पिता वही जो संतानों के दुख में

दिल को खुद कलपाता है

और उस दुख को खुशियों में बहला

संतोष के आंसू बहाता है।

जुही कुमारी

बी. ए.हिन्दी (विशेष) प्रथम वर्ष

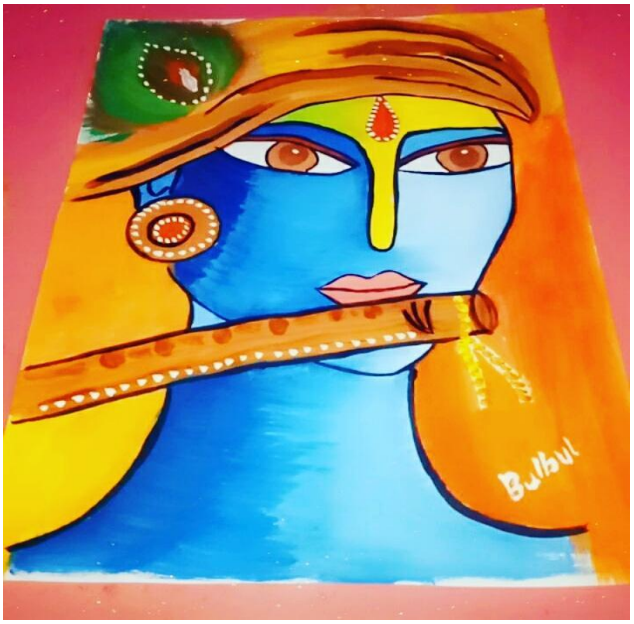

बुलबुल राना (हिंदी विशेष) तृतीय वर्ष

'किन्नर' समाज का एक हिस्सा

उसको सजने की आदत थी

आदिकाल में उसकी छवि अर्द्धनारीश्वर की थी

हिन्दू हो या मुस्लिम, कौन हो तुम?

रामायण हो या कुरान सब में हो तुम,

ना नर हो ना हो नारी हो तुम

लेकिन फिर भी खुदा की नायाब कला हो तुम.....

तुम भी जन्मते हो कोख से एक माँ की

तुमको जनने में भी माँ न सहती है,

फिर भी क्यों एक प्रश्न चिह्न हो तुम?

कोई कहता हिजड़ा तुम्हें, कोई अभिशाप समझता है
उतार बलाएँ सबकी तुम, खुशियों से झोली भरते हो
भरपूर दुआएँ देकर भी, तिरस्कार पाते हो
मुस्कान से पुरुष और हंसने से स्त्री लगते हो
कोई देख नहीं पाता ज़ख्म तुम्हारे
फिर भी नाचते– गाते हो.....
मज़ाक बनाते जाते हैं सब
ताली पीटने पर तुम्हारे
ना जाने क्यों कर जाते धिक्कार हैं सब
खुशी में अपनी शामिल करते हैं
फिर ना जाने क्यों शर्मिंदा करते हैं
कुदरती मिली सुंदरता हो तुम
समाज द्वारा बहिष्कृत एक सच्चाई हो तुम

मेघा
बी. ए. हिन्दी (विशेष) द्वितीय वर्ष

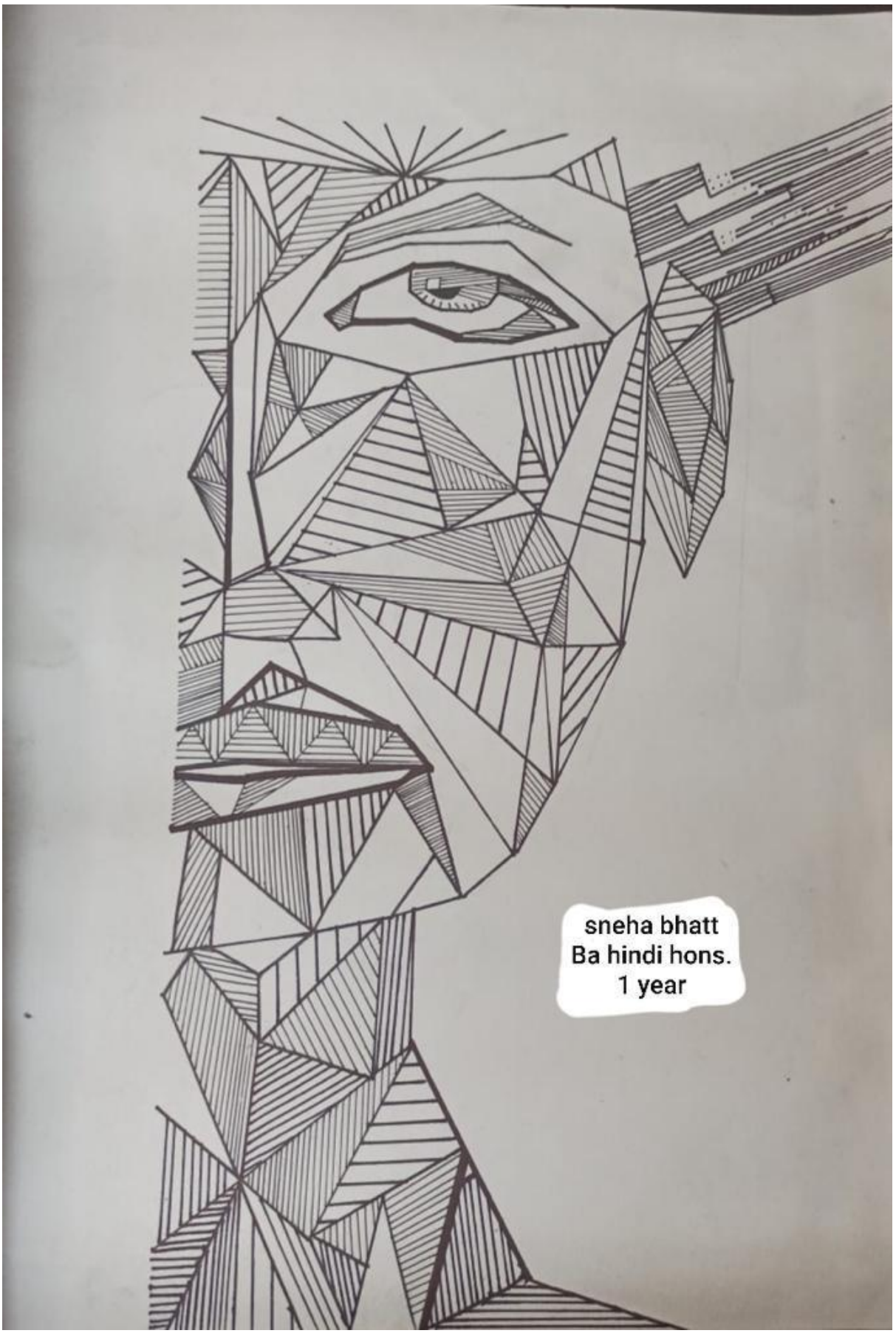
sneha bhatt
Ba hindi hons.
1 year

मेरे पापा

जिंदगी तो मेरी कट रही है आपके बाद भी
मगर आपके बिन जीने में वो बात नहीं
ऊपर से तो मेरे अपने ही हैं
मगर आपके साथ जो अलग रिश्ता था वो अब
किसी के साथ नहीं।
ख्याल सब रखते हैं मेरा अपने तरीके से
वो भी अच्छी तरह
मगर आप से जिद करने का मज़ा अब अलग नहीं
याद आते हैं वो पल
जब आप करते थे मेरे बालों की
स्ट्रेटनिंग इस्त्री करने वाली प्रेस से
पर पापा अब मैंने स्ट्रेटनिंग मशीन
खरीद ली है।
मैं आज भी शाम को दरवाज़े पर नजरें
टिकाए रहती हूँ
कि आएंगे अभी पापा काम पर से लौटकर
और देंगे पैसे चीज़ खाने को
मगर जब देखती हूँ आस-पास
तो आप नहीं दिखाई देते
तब सच में आपकी ये गुड़िया
बाथरूम में नलका चलाकर खूब रोती है
याद है आते हैं वो पल
जब कच्चे पके अमरूदों को संग मिलकर
खाते थे और खेलते सब मिलकर कैरम।
आज एल.ई.डी. टी.वी. भी है, ए.सी. भी है, पर अब
रातों में साथ जागकर टी.वी देखने का
मजा नहीं।
अब जब कोई परेशानी आती है
तो कोई नहीं जो आंसू पौंछे और बोले
टेंशन मत ले बेटा
पापा है न तेरे साथ

वो स्कूल की प्रैक्टिकल फाइल में

मेरी हेल्प कराना

और पूरा दिन फाइल बनाकर जब

मेरा थक जाना

और आपका मेरा सर दबाना

सब याद आता है

कोई भूल थी अगर मेरी तो एक

दफा कहते मुझे

ऐसे अकेले छोड़ जाना कोई

अच्छी बात नहीं।

लीना

बी. ए. हिन्दी (विशेष) प्रथम वर्ष

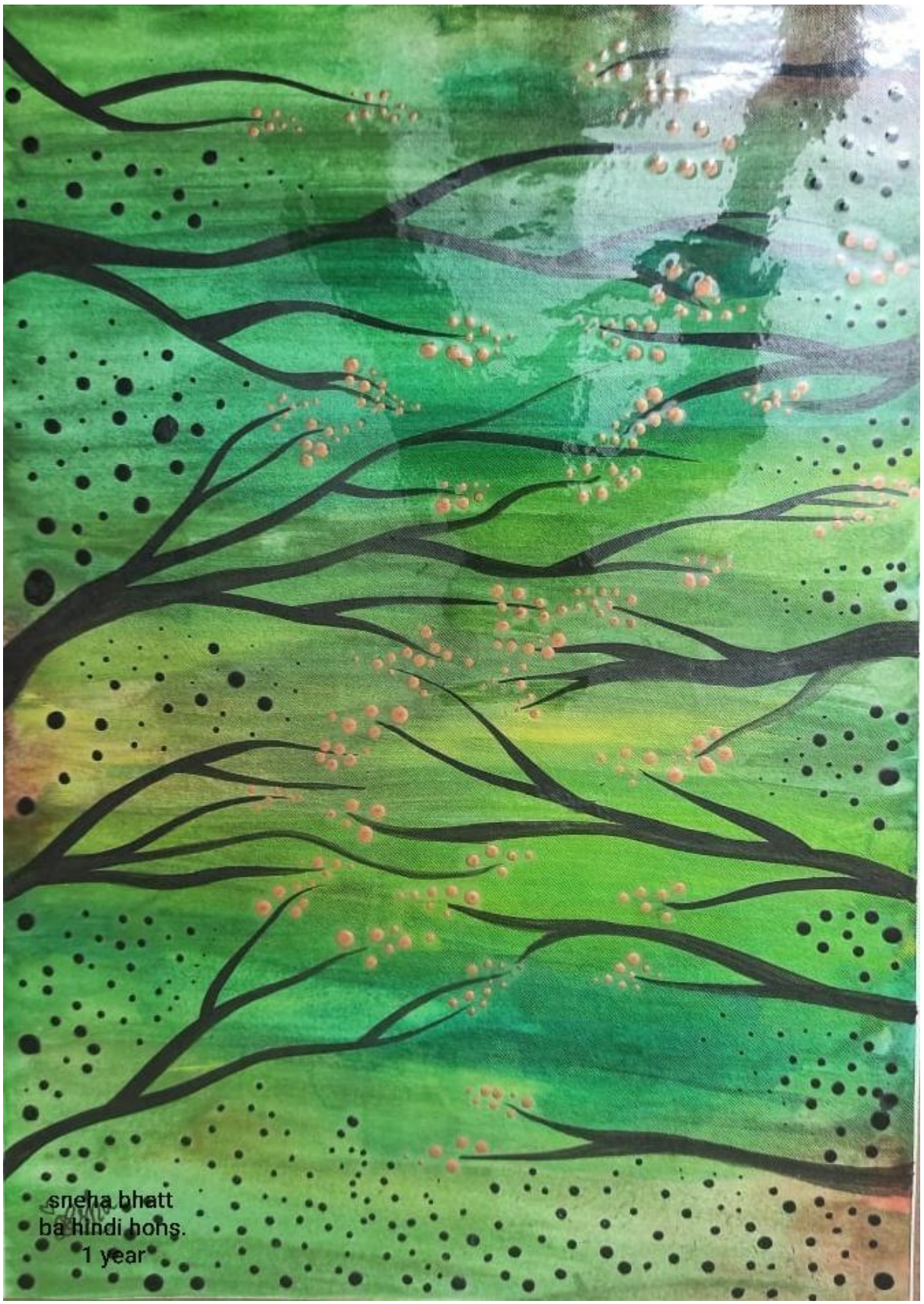

स्नेहा भट्ट (हिंदी विशेष) प्रथम वर्ष

प्रेमचन्द कृत 'कफ़न' कहानी में भूख : एक केन्द्रीय समस्या

'कफ़न' प्रेमचंद की 1936 में लिखित यथार्थवादी कहानी है| यथार्थवाद में समाज का कटु 'सत्य' का चित्रण होता है| कई आलोचकों ने इस कहानी को विवादस्पद और निराशाजनक माना है| इस संदर्भ में डॉ.नामवर सिंह का मानना है, "निराशा की कहानी समझना भूल होगी, वह शोषण के प्रति विद्रोह की कहानी है|"

'भूख' कफ़न में केन्द्रीय समस्या है| क्योंकि कहानी का आरंभ 'भूख' से होता है और अंत भी| 'बुझा हुआ अलावा' इसका संकेत है कि, उसके घर में पकाने के लिए कुछ भी नहीं है| घीसू और माधव भूखे क्यों हैं? इसके कारणों की पड़ताल ही पूरी कहानी में चित्रित हुई है| यह कहानी भूख, प्यास, और ठिठुरन आदि के इर्द-गिर्द बुनी गई है| जीवन की अति साधारण माँगों के परिपेक्ष्य में वे इंसान को ज़िंदगी और मौत से जूझता हुआ दिखाया गया है| इन विषयों पर वही आदमी लिख सकता है जो आभाव में वर्षों तक जूझते रहा है| भीष्म सहनी का मानना है कि, "ग़रीब की दुनिया में सब कुछ गौण है, प्रसूति में चिल्लाने और अंत में दम तोड़ जाने वाली पत्नी गौण है, पिता-पुत्र और पत्नी का रिश्ता भी गौण है| भुने हुए दो आलू सबसे अधिक महत्त्व रखते हैं|" यह वह दुनिया है जहाँ 'भूख' ने सभी मूल्यों को असंगत बना दिया है| इस प्रकार 'कफ़न' कहानी में 'भूख की भूमिका' को निम्नालिखित शीर्षकों के माध्यम से रेखांकित किया जा सकता है:

1. मानव निर्मित भूख
2. सामंत विरोधी व्यवस्था से उत्पन्न भूख
3. सामाजिक रीति-रिवाज़ों और रूढ़ मान्यताएँ

<u>मानव निर्मित भूख:</u> यह प्रेमचंद की सबसे दर्दनाक कहानी है जो जीवन के अतिसाधारण माँगों के लिए इनसान ज़िंदगी और मौत के जूझता रहता है| उसके जीवन की दारुण स्थिति इन्हीं मूल्यों पर केन्द्रित है| 'कफ़न' का घीसू अपना डर और शर्म-हया को तिलांजलि दे चुका है| वह जनता है कि उसकी दुनिया सांस्कृतिक मूल्यों पर नहीं, वरन् दो जून की रोटी पा चलती है| कहानी के मूल में विसंगतियों का चित्रण है| जो न केवल घीसू और माधव के हैं, बल्कि गाँव में रहने वाले अमीर-गरीब सभी के जीवन के पट खोलने लगती है, "एक ऐसे समाज में जहाँ दिन-रात पसीना बहाने वालों की स्थिति इन से बेहतर नहीं और किसानों के मुक़ाबले में वे लोग जो किसानों की दुर्बलताओं से लाभ उठाना जानते थे, कहीं ज्यादा संपन्न थे, वहाँ इस तरह की मनोवृति का पैदा हो जाना कोई अचरज की बात न थी|"

<u>सामंत विरोधी व्यवस्था से उत्पन्न भूख</u>: प्रेमचंद जी भूख की मूल समस्या सामंती/पूँजीवादी व्यवस्था को मानते हैं| वे लिखते हैं, "वह क्या स्नेह, सौजन्य और सच्चाई का पुतला मनुष्य दया ममता शून्य जड़ यंत्र बनकर रह गया है| महाजनी सभ्यता ने नए-नए नियम गढ़ लिए हैं...इस सभ्यता का सिद्धांत है बिजनेस इस बिजनेस –व्यवसाय, व्यवसाय है, उसमें भावुकता के लिए गुंजाइश नहीं|" कहानीकार पाठक को बेचैन और विक्षुब्ध करती हैं, व्यवस्था की विसंगतियों के प्रति उसके मन में वितृष्णा पैदा करता है| घीसू- माधव और बुधिया का भूख महज एक संयोग है सामंती व्यवस्था की विकृतियों को प्रस्तुत करने का|

<u>सामाजिक रीति-रिवाज़ों और रूढ़ मान्यताएँ</u>: यह कहानी घीसू और माधव के माध्यम से भारतीय समाज के धार्मिक और सामाजिक अंतर्विरोध को भी उभरता है| घीसू कहता है कि, "कैसा बुरा रिवाज़ है कि जीते जी तन ढकने को चिथड़ा भी न मिले| उसे मरने पर नया कफ़न चाहिए|" इसपर माधव का कहना है "कफ़न लाश के साथ जल ही तो जाता है|...और क्या रखा है? यही पाँच रुपये पहले मिलते तो कुछ दवा-दारू कर लेते|" कहानी का यह पक्ष सामाजिक और धार्मिक विडंबना को उजागर करता है|

'भूख' इस कहानी का साधारण भूख नहीं है| यह मेहनतकश मजदूरों और शोषक व्यवस्था की अमानवीय स्थितियों को उजागर करता है| जो पेट के बल रेंगती मानवीय विडंबना है| डॉ.बच्चन सिंह ने ठीक ही लिखा है, "यह उनके जीवन का ही कफ़न नहीं सिद्ध हुई बल्कि उनके संचित आदर्शों, मूल्यों, आस्थाओं और विश्वासों का भी कफ़न सिद्ध हुई|"

कोमल

हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष

प्रेमचन्द कृत 'कर्मभूमि' उपन्यास : एक विश्लेषण

'कर्मभूमि' प्रेमचंद का राजनीतिक उपन्यास है| जिसका प्रकाशन पहली बार सन् 1932 में हुआ| इस उपन्यास में प्रेमचंद जी ने समरकांत और उसके परिवार के माध्यम से सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है| ये परिवार अपने परिवारिक समस्याओं से जूझते हैं फिर भी इसमें भारतीय स्वतंत्रता आंदोलनों की राजनीतिक छाप

देखने को मिलती है| प्रेमचंद महात्मा गाँधी के विचारों से प्रभावित थे| जिसका प्रभाव इस उपन्यास पर है| गाँधी जी ने अंग्रेजों के ख़िलाफ़ भारतीयों से कहा कि, "जेलों को इतना भर देना चाहिए कि उनमें जगह न रहे और इस प्रकार शांति और अहिंसा से अंग्रेजी सरकार को हराया जा सकता है|" इस उपन्यास में इसकी प्रतिध्वनि सुनाई देती है| सभी पात्र जेलों में ठूस दिए जाते हैं। इस तरह प्रेमचंद जी तत्कालीन सभी राजनीतिक एवं सामाजिक समस्याओं को कथानक से जोड़ देते हैं| निर्धनों के मकान की समस्या, अछूतोद्धार की समस्या अछूतों के मंदिर में प्रवेश की समस्या, भारतीय स्त्रियों की सतीत्व की रक्षा की समस्या, अंग्रेजी शासन के दमन की समस्या, भारतीय समाज में व्याप्त धार्मिक कर्मकांड की समस्या और नवीन चेतना के समाज में संचरण की समस्या, राष्ट्र के लिए आन्दोलन करने वालों की पारिवारिक समस्याएँ आदि|

'कर्मभूमि' का नायक अमरकांत एक अस्थिर गाँधीवादी के रूप में चित्रित किया गया है| अमरकांत तत्कालीन मध्यमवर्ग का प्रतिनिधि है, जिसकी मूल-प्रवृत्ति समझौतावादी है, उसकी राजनीतिक दृष्टि एवं चारित्रिक दृढ़ता अविश्वसनीय है। गाँधीवाद से प्रभावित जन समुदाय की भावना, सामूहिक सत्याग्रह, गांवों के रचनात्मक कार्यक्रम का चित्रण पूरी आस्था से किया गया है। इनके सभी चरित्रों को निम्नलिखित रूप में देखा जा सकता है:

<u>पारिवारिक व्यवस्था</u> - मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है| इस व्यवस्था में परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है| इसको प्रेमचंद जी निम्नलिखित संबंधों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं:

भाई-बहन संबंध - नैना अमरकांत की सौतेली बहन है| इस दोनों के बीच बहुत प्यार रहता है| जब अमरकांत फ़ीस जमा नहीं करवा पाता है और उसका दोस्त सलीम उसकी फ़ीस भरता है तो नैना कहती है "क्या हुआ भैया फ़ीस जमा हुई या नहीं? मेरे पास बीस रुपये हैं, यह ले लो| मैं कल और किसी से माँग लाऊँगी|" वह आगे कहती है, "मैं तुम्हें अपने कड़े दे रही थी, क्यों नहीं लिये?" अंत में नैना अपने भाई, भाभी और पिता के जेल जाने पर भीड़ का नेतृत्व करती है|

पति-पत्नी संबंध - प्रेमचंद जी ने कर्मभूमि उपन्यास में पति-पत्नी के संबंधों को दर्शाया है| अमर और सुखदा के संबंधों पर वे लिखते हैं, "विवाह हुए दो साल हो चुके थे पर दोनों में कोई सामंजस्य न था ! दोनों अपने-अपने मार्ग पर चले जाते थे| दोनों का विचार अलग व्यवहार अलग संसार| जैसे दो भिन्न जलवायु के जंतु एक पिंजरे में बंद कर दिए हो|" परन्तु अंत में अमरकांत का ह्रदय परिवर्तन हो जाता है| वह अनुभव करता है कि वह जो आरोप सुखदा पर लगता था| वह गलत था| उसमें उसकी कमी थी|

इसी प्रकार प्रेमचंद जी ने ननद-भाभी, माँ-बेटी, ससुर-बहू आदि रिश्तों का भी बड़ा ही सुन्दरता से वर्णन किया है| और व्यक्ति, परिवार तथा समाज के रिश्तें को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया है|

राष्ट्रीय चेतना - 'कर्मभूमि' राजनीतिक उपन्यास है| जिसमें स्वतंत्रता आंदोलन का स्पष्ट गूंज तो सुनाई नहीं देता| किन्तु उपन्यास में गाँधी जी के स्वाधीनता और अछूतोद्धार आन्दोलन की साहित्यिक रूप है| नायक अमरकान्त बनारस के सेठ समरकान्त का बेटा है जो शुद्ध खद्दरधारी, चरखा चलाने वाला समाजसेवी है| प्रेमचंद जी ने क्रान्ति का व्यापक चित्रण करते हुए तत्कालीन सभी राजनीतिक और सामाजिक समस्याओं को कथानक से जोड़ा है| जैसे महात्मा गाँधी के सत्याग्रह का प्रभाव, स्त्री समस्या और धार्मिक कर्मकांड सुधार आदि|

इस प्रकार कहा जा सकता है कि इस उपन्यास में प्रेमचंद जी ने भारतीय सामाजिक और राजनैतिक व्यवस्था का जीवंत चित्रण किया है| जिसे आलोचकों ने गाँधीवाद का साहित्यिक संस्करण कहा है|

कोमल

हिंदी विशेष, द्वितीय वर्ष

स्त्री सशक्तिकरण

स्त्री सशक्तिकरण के बारे में जानने से पहले हमें 'सशक्तिकरण' के अर्थ को समझ लेना चाहिए| 'सशक्तिकरण' से तात्पर्य किसी व्यक्ति की क्षमता से है| जिससे उनमें ये योग्यता आ जाती है कि वो अपने जीवन से जुड़े सभी निर्णय स्वयं ले सके| महिला सशक्तिकरण में भी हम उसी क्षमता की बात कर रहे हैं| जहाँ महिलाएँ परिवार और समाज के सभी बंधनों से मुक्त होकर अपने निर्णयों की निर्माता ख़ुद हो|

सरल शब्दों में स्त्रियों के सशक्तिकरण का मतलब है कि स्त्रियों को अपनी ज़िंदगी का फ़ैसला करने की स्वतंत्रता देना या उनमें ऐसी क्षमताएँ पैदा करना ताकि वे समाज में अपना सही स्थान स्थापित कर सके| आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक महिला की स्थिति सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक रूप से समान नहीं रहा है|

भारत में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए सबसे पहले समाज में उनके अधिकारों और मूल्यों को मारने वाले उन सभी राक्षसी सोच को मारना ज़रूरी है| जैसे- दहेज़ प्रथा, अशिक्षा, यौन हिंसा, असमानता, भ्रूण हत्या, घरेलू हिंसा,

बलात्कार, वेश्यावृति और ऐसे ही दूसरे विचार| लैंगिक भेदभाव से राष्ट्र में सांस्कृतिक, सामाजिक और शैक्षिक असमानता पैदा करता है| जो देश की तरक्की के लिए हानिकारक है| भारत के संविधान में उल्लेखित समानता के अधिकार को सुनिश्चित करने के लिए महिलाओं को सशक्त बनाना सबसे प्रभावशाली उपाय है| क़ानूनी प्रक्रिया के अलावा सामाजिक सोच में परिर्वतन भी ज़रूरी है|

"जब है नारी में शक्ति सारी, तो फिर क्यों नारी को कहे बेचारी|"महिलाओं को सशक्त बनाने में निम्नलिखित महापुरुषों/स्त्रियों की भूमिका विचारणीय है:

1. महात्मा गाँधी
2. जवाहरलाल नेहरू
3. डॉ भीमराव अम्बेडकर
4. सिमोन द बोउवा

महात्मा गाँधी: गाँधी जी ने स्त्री के शक्ति रूप को उभारा| उनकी नज़रों में स्त्री-पुरुष समान हैं| उनकी आदर्श स्त्री में सीता, दमयंती और द्रोपती के सभी गुणों का समावेश था| जो तत्कालीन भारतीय समाज को नई दिशा देने के लिए आवश्यक था| जैसे सीता स्वदेशी की पोषक तो थी किन्तु वह राम की गुलाम नहीं थी| उसका नैतिक शक्ति के सामने रावण भी निस्सहाय हो जाता था| भारतीय स्त्रियों को उन्होंने सीता की तरह मज़बूत होने की सलाह दी| वे स्त्री को माँ और पत्नी के अलावा समाज को आगे बढ़ाने में अहम भूमिका निभाने को भी कहा|

जवाहरलाल नेहरू: भारत के प्रथम प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू स्त्री सशक्तिकारण की बात करते हैं| इसकी शुरुआत वे अपनी पुत्री से करते हैं| वे जेल से भी अपनी पुत्री इंदरा को हमेशा पत्रों के माध्यम से भारत और दुनिया से परिचित करते रहे| उनका मानना है, "लोगों को जगाने के लिए महिलाओं का जागृत होना ज़रूरी है| एक बार जब वो अपना कदम उठा लेती है, परिवार आगे बढ़ता है, गाँव आगे बढ़ता है और राष्ट्र विकास की ओर उन्मुख होता है|"

डॉ भीमराव अम्बेडकर: संविधान निर्माता डॉ भीमराव अम्बेडकर का योगदान केवल दलित मुक्ति के लिए नहीं है| उनकी भूमिका महिला सशक्तिकरण में भी है| आज जो महिलाओं को संवैधानिक अधिकार प्राप्त है उसकी नीव डॉ अम्बेडकर ने रखी थी| जिस कारण महिलाएँ घर की चार दिवारी के बहार निकलकर आज हर क्षेत्र में पुरुष के कंधे-से-कंधा मिलकर चल रही है|

सिमोन द बोउवा: नारीवादी आंदोलन को विचारों से सशक्त बनाने में फ्रांसीसी लेखिका सिमोन द बोउवा अत्यंत महत्त्वपूर्ण है| उनका मानना है कि, "स्त्री पैदा नहीं होती उसे स्त्री बना दिया जाता है|" उनकी संपल्पना के अनुसार, नारी को उसके जीवन में उसकी पसंद-नापसंद के अनुसार रहना और काम करने का हक़ होना चाहिए और वह पुरुष से समाज में आगे बढ़ सकती है| नारी को अपने परंपरागत सोच से निकलकर स्वतंत्र जीवन जीना चाहिए| इसके लिए उसे शिक्षित होने की ज़रूरत है| और सामाजिक सोच में भी परिवर्तन करने की आवश्यता है| स्त्री को सशक्त बनाने में कानूनी अधिकार के अलावा सामाजिक सोच में परिवर्तन की आवश्यक है| अगर महिलाओं के प्रति पुरानी सोच में परिवर्तन नहीं होगा तो स्त्री और समाज दोनों का विकास असंभव है| सभी विचारकों का भी यही मानना है|

अंजली रानी हिंदी विशेष, तृतीय वर्ष,

sneha bhatt
Ba hindi hons.
1 year